

ਅਨਨਦਪੁਰ

(ਨਿਹਕਲਾਂਕ ਹਰਿ ਸ਼ਬਦ ਭੰਡਾਰ ਵਿਚਾਂ)



ਸੋਹਾਂ ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ੇਰ ਸਿੱਧ ਵਿ਷ਨੂੰ ਭਗਵਾਨ ਦੀ ਜੈ
ਸੋਹਾਂ ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ੇਰ ਸਿੱਧ ਵਿ਷ਨੂੰ ਭਗਵਾਨ ਦੀ ਜੈ



ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਘਰ ਕਹਣ ਅਸੀਂ ਵੇਖਣ ਆਏ ਨਜ਼ਾਰਾ, ਜੁਗਾਂ ਦਾ ਲਹਣ ਸੁਕਾਈਆ। ਪੂਰਬਲਾ ਲੈਣ ਆਏ ਉਧਾਰਾ, ਇਕਰਾਰ ਪ੍ਰਭ ਨਾਲ ਕਰਾਈਆ। ਅਜ਼ਜ ਰਵਾ ਭਗਤਾਂ ਦਾ ਭੰਡਾਰਾ, ਲਹਣਾ ਰਹੇ ਸਮਯਾਈਆ। ਇਕਕੋ ਗੋਬਿੰਦ ਸੁਤ ਦੁਲਾਰਾ, ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦਾ ਗਿਆ ਜਣਾਈਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਕਲਿਜੁਗ ਅੰਤਮ ਹੋਵੇ ਅੰਧ ਅੰਧਧਾਰਾ, ਜਗ ਨੂਰ ਨਜ਼ਰ ਨਾ ਆਈਆ। ਹਾਹਾਕਾਰ ਕਰੇ ਸਾਂਸਾਰਾ, ਸੂਣਠੀ ਦੂਣਠੀ ਅੰਦਰ ਕੁਰਲਾਈਆ। ਧਰਮ ਰਹੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਦਵਾਰਾ, ਧੀਰਜ ਧੀਰ ਨਾ ਕੋਈ ਧਰਾਈਆ। ਪਿਤਾ ਪੂਤ ਨਾ ਕਰੇ ਪਾਹਾ, ਨਾਰ ਕਨਤ ਨਾ ਸੋਭਾ ਪਾਈਆ। ਸਾਧ ਸਨਤ ਕਰਨ ਵਿਮਚਾਰਾ, ਮੁਲਲਾ ਸ਼ੇਖ ਕੂਡ ਕੁਡਮਾਈਆ। ਪਂਡਤ ਪਾਂਧੇ ਪ੍ਰਭ ਦੇ ਨਾਮ ਦਾ ਮਾਂਗਣ ਭਾੜਾ, ਕੀਮਤ ਟਕਧਾਂ ਵਾਲੀ ਪਾਈਆ। ਕਲਿਜੁਗ ਕੂਡੀ ਕ੍ਰਿਧਾ ਦਾ ਘਰ ਘਰ ਲਗੇ ਅਰਖਾੜਾ, ਸੂਣਠੀ ਦੂਣਠੀ ਦਾ ਨਚਾਈਆ। ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਘਰਾਂ ਚਲੇ ਕੋਈ ਨਾ ਚਾਰਾ, ਚਾਰੋਂ ਕੁਣਟ ਰਹੀ ਕੁਰਲਾਈਆ। ਰਖੇਲ ਕਰੇ ਅਗਸ਼ ਅਪਾਰਾ, ਅਲਖ ਅਗੋਚਰ ਬੇਪਰਵਾਹੀਆ। ਜਿਸ ਦਾ ਸਾਰੇ ਮਾਂਗਦੇ ਗਏ ਸਹਾਰਾ, ਨਿਉਂ ਨਿਉਂ ਸੀਸ ਝੁਕਾਈਆ। ਭਵਿਖਤਾਂ ਵਿਚ ਲੇਖ ਚੀਓਂ ਅਵਤਾਰਾ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਜਨਮੇ ਕੋਈ ਨਾ ਮਾਈਆ। ਕਾਗਜ ਕਲਮ ਨਾ ਲਿਖਣਹਾਰਾ, ਅਕਰਖਰਾਂ ਵੰਡ ਨਾ ਕੋਈ ਵੰਡਾਈਆ। ਕਰੇ ਰਖੇਲ ਗੁਪਤ ਜਾਹਰਾ, ਚੌਰੀ ਠਗੀ ਵਿਚ ਲੋਕਾਈਆ। ਵਰਖਰਾ ਹੋ ਕੇ ਸਭ ਤੋਂ ਨਿਆਰਾ, ਨਿਰਗੁਣ ਆਪਣੀ ਕਲ ਵਰਤਾਈਆ। ਇਕ ਬਣਾਏ ਭਗਤ ਦਵਾਰਾ, ਧੁਰ ਦਰਬਾਰਾ ਦਾ ਦੂਢਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਥ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਕਰੇ ਰਖੇਲ ਬੇਪਰਵਾਹੀਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਘਰ ਕਹਣ ਅਸੀਂ ਆਏ ਧੁਰ ਦੇ ਨਫੂ, ਭਜ਼ੇ ਵਾਹੋ ਦਾਹੀਆ। ਸਾਡੇ ਪਿਠੇ ਚੁਕਕੇ ਥਕਕ ਗਏ ਗਰੰਦਨ ਵਾਲੇ ਪਫੂ, ਨਾੜੀ ਨਾੜੀ ਦਾ ਗਵਾਹੀਆ। ਜਨ ਭਗਤ ਸੁਹੇਲੇ ਵੇਰਵੇ ਲੋਕਮਾਤ ਸਚਵੇ, ਪ੍ਰੀਤੀ ਸਾਹਿਬ ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਲ ਰਖਾਈਆ। ਆ ਗਏ ਓਸੇ ਦੇ ਕੋਲ ਨਸ਼ੇ, ਜਿਸ ਦੀ ਮੰਜਲ

अगे ना कोई वर्खाईआ। इक मुहब्बत विच्च फसे, दूजी करन ना कोई पढ़ाईआ। विक गए इको हड्डे, कीमत जगत वाली रहे गवाईआ। तुल गए इको वड्हे, दूजा तराजू ना कोई उठाईआ। करया खेल पुरख समरथ्ये, छब्बी पोह वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कहण की माता गुजरी आई विचार, गुजरया हाल देणा सुणाईआ। जिस नूं समझ ना सके वेद चार, पुरान अठारां ना पडदा लाहीआ। गीता ज्ञान ना अक्ख सकी उघाड़, शास्त्र छे ना कोई वडयाईआ। अज्जील कुरान ना सकक्या कोई उठाल, बाहों फड़ ना कोई उठाईआ। ग्रंथां विच्चों ना आई भाल, पन्थां वाले देण दुहाईआ। जिस दा जगत खेल कमाल, कामल मुशर्द बेपरवाहीआ। उह जाणे मुरीदां हाल, धुर दा मालक नजरी आईआ। हुक्म दित्ता धुर करतार, कुदरत दा मालक आप जणाईआ। गोबिन्द हो के आप त्यार, कदम आपणा लिआ उठाईआ। साचा फतिह बोल जैकार, जैकारा इको दित्ता लगाईआ। गुजरी उठ के देण लग्गी प्यार, पुत्तर कह के हत्थ उठाईआ। गोबिन्द किहा मेरे अंदर पुरख अकाल, तूं हुण नहीं मेरी जम्मण वाली माईआ। मैं छडु जाणा घर बार, झगड़े देणे मिटाईआ। मैं बण जाणा कंगाल, गुरमुखां दे अंदर वड के झट्ठ लंघाईआ। मैं इको दा बणना लाल, जिस दा जमाल ना कोई मिटाईआ। मेरे कदी नहीं मुकणे साल, मेरी आयू ना कोई गवाईआ। मैं वसणा ओस धर्मसाल, जिथ्ये वरन बरन वंड ना कोई वंडाईआ। गुजरी फेर किहा आ मेरे लाडले लाल, गल्लवकड़ी लवां पाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं पुरख अकाल गोदी लिआ बठाल, सुक्ख बहुता रिहा वर्खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ।

गुजरी कहे सुण मेरे बांके नौजवान, बचन निकका दिआं सुणाईआ। एह सोहणे दिसण मकान, जो सिरवां लए बणाईआ। एह वडे वडे पहलवान, जो भुकर्वे मर के झट्ठ लंघाईआ। उह वडे वडे प्रधान, माझे वाले गए मुख भुआईआ। उह सुणन वाले फरमाण, नीवीआं रहे पाईआ। बाहर हुन्दी कत्लेआम, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। पुरख अकाल खेल करे कमाल, आपणी कल वरताईआ। गोबिन्द किहा धन्न भाग जे छुट्टण लग्गा जंजाल, नाता जगत नालों तुडाईआ। फल लग्गण लग्गा मेरे डाल, चार कुण्ट महक दए महकाईआ। मेरा अन्त इक सवाल, सुण लैणा मेरी जगत वाली माईआ। मैनूं अज्ज तो नहीं कहणा मेरा लाल, पुत्तर आख ना कदे बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ।

गुजरी किहा गोबिन्द औह वेरव हाथी घोड़े, बद्धे नजरी आईआ। गोबिन्द किहा मैं हत्थों लाह दिते कंगणां दे जोड़े, खाक विच्च रलाईआ। मैं सुणे उह दोहरे, जो दोहरा रंग चढ़ाईआ। क्यों तेग बहादर पिआ रिहा विच्च भेरो, भेरो खा के झट्ठ लंघाईआ। क्यों गुरू ग्रंथ विच्च काग़ज रक्खे कोरे, बिन अरजन समझ किसे ना आईआ। इक पुरख अकाल दी लोड़े, दूजा संग ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ।

गुजरी कहे हुण चलणा केहडे राह, रस्ता नजर कोई ना आईआ। की बंधन लवां बंधा, भार सिर उठाईआ। गोबिन्द किहा मैं सभ कुछ जाणा लुटा, जगत वस्त दी लोङ रहे ना राईआ। सभ नूं खाली हत्थ देणे वरवा, आप गुरमुखां दे अंदर वड के झट्ट लंघाईआ। जे कोई प्यार नाल आपणी मुहब्बत देवे खवा, ओनूं खा के झट्ट लंघाईआ। तूं अज्ज तों मेरी नहीं नूरी मां, तत्तां वाली दिआं समझाईआ। मेरी ओस ने पकड़ी बांह, जिस नालों ना होवे जुदाईआ। हौके विच्च गुजरी दी निकल गई धाह, हत्थ छाती उत्ते रखाईआ। क्यों पुरी अनन्द दित्ता छुडा, दोहत्थड मार के दित्ती दुहाईआ। जिहड़ा खुशीआं नाल दित्ता वसा, उह आपे दिता ढाहीआ। अग्गे सरसा वगे दरया, पवण ठंडी नाल रलाईआ। गोबिन्द किहा सभ कुछ दे भुला, हवस ना कोई वधाईआ। बेडे पार करौण वाला मैं इकको बज्जा मलाह, जो आदि जुगादि पत्तण ते बैठा नजरी आईआ। मेरे बिना कदी कम्म ना आवे किसे दे खुदा, परमात्मा मिलण किसे ना आईआ। मैं शब्द गोबिन्द हो के पहलों सभ दा साफ करां राह, रस्ता दिआं बणाईआ। फिर ओनूं लवां उठा, जिनूं आपणा रंग चढाईआ। सच दवारे लवां मिला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। तैनूं अगला लेखा दिआं सुणा, बिनां लिख के कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर नाल इकक उठाईआ।

गुजरी कहे मैं वेरवां चार चौफेर, अन्त अखीरी ध्यान लगाईआ। छड्हुण लगिआं नहीं लगी देर, धुर दा हुक्म दित्ता समझाईआ। गोबिन्द किहा एह मैं छेड़ी निककी जिही छेड़, छेकड़ सभ नूं दिआं खपाईआ। मेरा समझे कोई ना गेड़, लकरव चुरासी रिहा भवाईआ। पुरख अकाल मेरे उत्ते रकरवणी मेहर, महिबूब इकको नजरी आईआ। मैं किसे दी चलण देणी नहीं जबर ज्ञेर, ज्ञोरू जर देणा मुकाईआ। मैं बब्बर होणा शेर केहर, घेरे विच्च रकरवां लोकाईआ। लहणे देणे देवां नबेड़, झागड़ा दिआं चुकाईआ। एह मेरी निककी जिही खेड, पुरी अनन्द तों शुरु कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ।

गुजरी दे अंदर आया इकक उत्शाह, उत्तर पूरब पच्छिम दकरवण वेरव वरवाईआ। नेत्र हन्जू दित्ता वरवा, मुख नाल हौका इकक सुणाईआ। ओसे वेले गोबिन्द रुमाल चिह्ना हत्थ दित्ता फज्जा, जल धार साफ़ कराईआ। जे तैनूं मां बणन दा चा, दूजी वारां फेर भी नाल मिलाईआ। मैं लभ्णा किसे नहीं थां, ऐवें करनी नहीं झूठी हां, इशारे नाल दृढ़ाईआ। मैं मन्दर अगम्मी रहां, जिथ्ये जोबन मिलदा नवां, बुढ़ापा रूप ना कोई बदलाईआ। पुरख अकाल दस्से जे समां, जे हुक्म करे ते भगतां सभ कुछ देवां, देंदिआं तोट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

गुजरी किहा मैनूं अंदर भुल गई इकक जंजीरी, जेहड़ी सोहणी नजरी आईआ। गोबिन्द किहा ओंहदी कड़ी वेरव अखीरी, जो नजर किसे ना आईआ। जिस वेले मेरा पुरख अकाल मेरे नाल आ गिआ तकदीरी, तकदीर भगतां दए बदलाईआ। किसे दी रहण नहीं

देणी मीरी पीरी, लेरवे सभ दे देणे मुकाईआ। भगतां नूं वरवौणी नहीं कोई गली भीड़ी, खुले राह पार लंधाईआ। की हो गिआ जे वल कर के प्रहलाद नूं तारन दा बहाना बणाया कीड़ी, ओसे कीड़ी ने माछूवाड़े विच्च आ के मेरा खेल वेखणा अखीरी, अखीर विच्च ओसे नूं गुरमुख लैणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ।

गुजरी किहा मेरा अंदर रह गिआ इकक दुपट्ठा, जो तेरे पिता दित्ता बणाईआ। गोबिन्द किहा मैं ओस दे कारन मुङ के आवां नट्ठा, अचरज खेल बणाईआ। भेरव धारां जगत वाला जट्ठा, जटां जूटां समझ किसे ना आईआ। गुरमुखां दे हिरदे फट्ठा, तीर निराला इकक चलाईआ। वस्त अमोलक अंदर घत्तां, अनमुलड़ी आप वरताईआ। लकरव चुरासी कोलों बचां, पड़दे ओहले पड़दा आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इकक सुणाईआ।

गुजरी किहा मेरे अन्तर इकक प्यासा, सच दिआं समझाईआ। गोबिन्द हुण तूं क्यों नहीं लंधिआ बिआसा, चार जुग दा लेरवा दे दृढ़ाईआ। गोबिन्द किहा इकक कदम चुक्कण नाल प्रभू दे भगतां नूं पवे धाटा, एसे कर के कदम ना अग्गे टिकाईआ। जिस वेले कलिजुग दी मुकौणी वाटा, झगड़ा मुकौणा लोकाईआ। अगम्मी अमृत दा लिऔणा बाटा, गुरूआं पैगंबरां सिर उठाईआ। रविदास दा वेख के चीथड़ पाटा, पारब्रह्म दा मेला लैणा मिलाईआ। नवां बण के साका, साख्यात करां रुशनाईआ। तूं हुण मेरा मन्न लै आखवा, अग्गे अक्खरां वाला, गोबिन्द फट्ठयां उत्ते सौण वाला, खवा पी के नहौण वाला, रसना नाल गौण वाला, फारसी पढ़ौण वाला, कांशी विच्च गुरसिरव पुचौण वाला, हत्थां विच कताबां फड़ौण वाला, सतरां उत्ते उंगलां चलौण वाला, वरके उलटौण वाला, अरदासे सुधौण वाला, फिर कदे ना आईआ। जे आवां ते सभ दा लेरवा मुकौण वाला, इकको पुरख अकाल दा ढोला गौण वाला, दूजा जाप ना कोई जपाईआ। गरीब निमाणयां कोझयां कमलयां फड़ के बाहों सचरवण्ड दवार पुचौण वाला, जूहां जंगलां दा गेड़ मुकाईआ। पुरी लोअ आकाश पाताल ब्रह्मण्ड खण्ड हिलौण वाला, हलूणा शब्द इकक दृढ़ाईआ। रुस्सयां नूं मनौण वाला, पुद्धयां टंगयां नूं बचौण वाला, लंगढे अन्धयां नूं राहे चलौण वाला, जगत विकारा गंदे मन्दयां नूं गोदी बहौण वाला, बिनां बन्दगी तों बन्दयां नूं बन्दे बणौण वाला, बिनां डंडिआं तों गुरमुख प्रेम दी मंजल टपौण वाला, पारब्रह्म आपणा रंग वरवाईआ।

गुजरी किहा ओ गोबिन्द किहो जिहा वेला गुजरा, मेरा अंदर दए दुहाईआ। गोबिन्द किहा एह मेरया भगतां दा वेरवीं फेर मुजरा, मुझ मिल के मिलणी भगवान नाल कराईआ। इन्हां दा सोहवे हुजरा, जिन्हां नूं हुज्जत करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

गुजरी किहा मेरे अंदर पैदा हौल, हौली हौली दिआं जणाईआ। गोबिन्द किहा मेरा

पुरख अकाल नाल कौल, दुष्ट दमन दिआं दृढ़ाईआ । तूं ना बण अनभोल, अगली अकरव खुलाईआ । मेरा विगड़िआ नहीं कुझ रत्ती चौल, कोटां गुणां बहुता नजरी आईआ । मेरा प्रकाश होणा उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ । हुण मैं सिरफ पंजां नूं दे के जाणी पौहल, अमृत रूप दरसाईआ । जिस वेले श्री भगवान नाल मिल के आवां भगतां कोल, नेड़े हो के दरस दिखाईआ । ओथे की कोई ढोली वजावे ढोल, डगगयां नाल डंका ना कोई खड़काईआ । मैं हर घट जावां मौल, एह मेरी बेपरवाहीआ । बिन कंडिउँ तोल के तोल, आपणे तककड़ दिआं चढ़ाईआ । सभ दा कर के भार हौल, आप भज्जां वाहो दाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ ।

गुजरी किहा मैनूं कुछ हो गिआ संसा, सहज नाल जणाईआ । गोबिन्द मैनूं औं जापिआ मेरा विछड़ जाणा बंसा, सरबंस संग ना कोई निभाईआ । गोबिन्द किहा एह मेरे साहिब दी बणता, जिस दी समझ कोई ना पाईआ । कोटन कोट वार मैं आया विच्च जंता, जगत जीव वेख वर्खाईआ । मेरा लेखा नहीं कोई गणता, अगणत देण दुहाईआ । मैं इकक नहीं गुरमुख चार जुग दे कहु तारने बणा के प्रभू दी संगता, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ । ओ गुजरी तेरा पुत नहीं होवे किसे दा मंगता, मंगण दवारे किसे ना जाईआ । हुण थोड़ा जिहा खेल वेखणा इशारे वाले जंग दा, जंगजू गुरमुख लए बणाईआ । जिस वेले गुर अवतार पैगंबरां उत्ते वेला आया तंग दा, तंगी सके ना कोई कटाईआ । दुनियां विच्च झगड़ा पिआ भुक्ख नंग दा, भुक्खयां ना कोई रजाईआ । सतिगुरू पातशाह हो के गरीबां दे घर पुरख अकाल फिरे मंगदा, घर घर झोली डाहीआ । एह खेल उहो पुरी अनन्द दा, जिस दा अनन्द हथ किसे ना आईआ । जो तुझ्यां गंदुदा, गंदुणहार गोपाल स्वामी सभ नूं दए सुणाईआ । उह जिस ने खेल करना ब्रह्मण्ड खण्ड दा, नव खण्ड आपणा डंक वजाईआ । एह लेखा नहीं किसे कच्चे तन्द दा, तन्दी तन्द सतार ना कोई दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हिरदे अंदर आपणा रंग रंगाईआ ।

गुर अवतार पैगंबर कहण गोबिन्द असीं सुणिआ इकक सलोक, जो सुल्हा कुल दित्ता समझाईआ । गोबिन्द किहा वेखयो होयो कोई ना डरपोक, दीनां मज्जबां वालिओ आपणा पैंडा लैणा मुकाईआ । सारे गुरू अवतार पैगंबर बिनां गोबिन्द तों मथ्ये उत्ते हथ हथ के करन लग्गे सोच, सोची सोच समझ किसे ना आईआ । गोबिन्द खोल के आपणा नेत्र लोचण लोच, लोचा सभ दी रिहा दरसाईआ । ओ जे तुर्सीं भगत दवारे गए पहुंच, पोचा पा के करे ना कोई सफ़ाईआ । एथे कोई मारया नहीं जांदा निर्दोष, दोशीआं दर आयां पार कराईआ । वेखयो कोई संग विच्च रिहो ना खामोश, आपणा हाल देणा दृढ़ाईआ । गुर अवतार पैगंबर कहण असां झगड़ा पाया चमड़ी वाला पोश, दस्स के चौदां लोक, चौदां तबक फिरदे रहे मार के लंगोट, अल्ला वाहिगुरू राम गा गा साडे थक्क गए होंट, अन्त मिल के निर्मल जोत, जिथ्ये वरन ना कोई गोत, बिना पुरख अकाल दे कोई ना ओट, जिस नूं गोबिन्द पिता लिआ बणाईआ । गुरसिखो एस तों परे होर नहीं कोई जोग, बिना

ਸਤਿਗੁਰ ਸ਼ਬਦ ਤੋਂ ਕਿਸੇ ਨਾਲ ਨਾ ਕਰਯਾ ਸੰਜੋਗ, ਬਿਨਾ ਪਾਰਭਵ ਭਰਵ ਨਾਲ ਭੋਗ ਕੋਈ ਨਾ ਭੋਗ,
ਧੁਰ ਦਾ ਰਸ ਅੰਦਰ ਵਸ ਨਾ ਕੋਈ ਚਰਖਾਈਆ।

ਗੁਜਰੀ ਕਹੇ ਗੋਬਿੰਦ ਮੇਰੇ ਆ ਨੇਡੇ, ਤੈਨੂੰ ਦਿਆਂ ਦਰਸਾਈਆ। ਪੁਰੀ ਅਨਨਦ ਨੂੰ ਪਏ ਘੇਰੇ, ਜੋਰ
ਦੁਸ਼ਮਣ ਰਹੇ ਜਣਾਈਆ। ਗੁਰਸਿਰਖ ਵੇਰਖ ਤੇਰੇ ਕੇਹੜੇ ਕੇਹੜੇ, ਬੈਠੇ ਬਲ ਵਧਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ
ਮੇਰੇ ਦੋ ਚਾਰ ਬਥੇਰੇ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਨਿਭੇਡੇ, ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਾਰ ਮੁਕਾਵੇ ਹੁਕਮ ਕੇਹੜੇ, ਹੁਕਮ ਦਾ ਮਾਲਕ
ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਜੇਹੜੇ ਚਢ੍ਹ ਗਏ ਮੇਰੇ ਬੇਡੇ, ਉਹ ਵਸਦੇ ਸਦਾ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਨੇਡੇ, ਘੇਰੇ
ਵਿਚਚ ਕਦੇ ਨਾ ਆਈਆ। ਥੋੜਾ ਸਮਾਂ ਰਕਖ ਲੈ ਜੇਰੇ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਹੋਣਾ ਵਿਚਚ ਅੰਧੇਰੇ, ਕਲਿਜੁਗ
ਰੈਣ ਅੰਧੇਰੀ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਾਚਾ ਰਖੇਲ
ਰਿਹਾ ਵਰਖਾਈਆ।

ਗੁਜਰੀ ਕਹੇ ਗੋਬਿੰਦ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਦੋਂ ਹੋਣਾ ਔਤਰਧਾਂ ਦਾ ਸਿਆਪਾ, ਸਫਾ ਦਾਂ ਮਿਟਾਈਆ।
ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਮੈਨੂੰ ਨਾਲ ਲੈ ਔਣ ਦੇ ਆਪਣਾ ਬਾਪਾ, ਜਿਸ ਦੀ ਆਪਾ ਭੇਟ ਕਰਾਈਆ। ਅਜੇ ਮੈਂ
ਓਸ ਦਾ ਨਿਕਕਾ ਜਿਹਾ ਕਾਕਾ, ਕਾਧਾ ਕੱਚਨ ਅੰਦਰ ਢੇਰਾ ਲਾਈਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਮੇਰੇ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ
ਦਾ ਦੀਨ ਦਧਾਲ ਦਾ ਹੋਣਾ ਵਡ ਪ੍ਰਤਾਪਾ, ਪ੍ਰਤਾਪੀ ਰਹਣ ਕੋਈ ਨਾ ਪਾਈਆ। ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਸਾਂਝਾ
ਦਰਸਣਾ ਜਾਪਾ, ਜਗ ਜੀਵਣ ਦਾਤਾ ਹੋ ਕੇ ਵੇਰਖ ਵਰਖਾਈਆ। ਓਸ ਵੇਲੇ ਫੇਰ ਵੇਰਵੀਂ ਰਖੇਲ ਤਮਾਸਾ,
ਖੁਲ੍ਹੀ ਅਕਰਵੀਂ ਦਿਆਂ ਵਰਖਾਈਆ। ਸਾਰੀ ਦੁਨਿਧਾਂ ਦਾ ਉਲਟਾ ਕੇ ਪਾਸਾ, ਪੁਸ਼ਤ ਪਨਾਹ ਭਗਤਾਂ ਹਤਥ
ਟਿਕਾਈਆ। ਨਾਲੇ ਦੇਵਾਂ ਆਪ ਸ਼ਾਬਾਸਾ, ਚਾਰੋਂ ਕੁਣਟ ਵੇਰਖਾਂ ਚਾਈ ਚਾਈਆ। ਬਣ ਕੇ ਦਾਸੀ ਦਾਸਾ,
ਸਭ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਵਾਂ ਕਮਾਈਆ। ਮੇਰਾ ਨੂਰ ਦਾ ਇਕਕੋ ਹੋਣਾ ਪ੍ਰਕਾਸਾ, ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਡਗਮਗਾਈਆ।
ਸਾਥ ਹੋਵੇ ਪੁਰਖ ਅਭਿਨਾਸਾ, ਸੋਹਣਾ ਜੋੜ ਜੁੜਾਈਆ। ਸਭ ਦਾ ਪੂਰਾ ਕਰਾਂ ਘਾਟਾ, ਖਾਲੀ ਝੋਲੀਆਂ
ਦੇਵਾਂ ਭਰਾਈਆ। ਜੇਹੜਾ ਅਮ੃ਤ ਚਰਖਾਧਾ ਵਿਚਚ ਬਾਟਾ, ਉਹਦਾ ਲਹਣਾ ਕਲਿਜੁਗ ਦਿਆਂ ਮੁਕਾਈਆ।
ਅਗਲਾ ਦੇ ਕੇ ਸਾਥਾ, ਸਗਲਾ ਸਾਂਗ ਬਣਾਈਆ। ਜੋ ਰਕਖੀ ਅੰਦਰ ਆਸਾ, ਉਹ ਵੀ ਪੂਰ ਕਰਾਈਆ।
ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਦ ਦੇਵੇ ਮਾਣ ਵਡਧਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਛੱਡ ਦੇ ਦੀਨ ਦੁਨਿਧਾਂ, ਦੁਨੀ ਵਲ ਧਿਆਨ ਨਾ ਕੋਈ ਲਗਾਈਆ। ਮੇਰਾ
ਮਾਲਕ ਇਕਕ ਵਡ ਗੁਣ ਗੁਣੀਆ, ਜੋ ਦਾਤਾ ਬੇਪਰਵਾਹੀਆ। ਜਿਸ ਨੇ ਪੁਕਾਰ ਮੇਰੀ ਸੁਣੀਆ, ਫੜ
ਬਾਹੋਂ ਲਿਆ ਉਠਾਈਆ। ਲਕਖ ਚੁਰਾਸੀ ਰਿਹਾ ਪੁਣੀਆ, ਵੇਰਖਣਹਾਰਾ ਥਾਊੱ ਥਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ
ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਝਾਗਢਾ ਮੁਕਾਏ ਰਿਖੀਆਂ ਮੁਨੀਆਂ, ਮੁਰੀਦਾਂ ਨਾਲੋਂ ਮੁਸ਼ਾਰਦ ਮੁਸ਼ਾਰਦਾਂ ਨਾਲੋਂ ਮੁਰੀਦ ਸਾਰੇ ਦਏ
ਸਮਝਾਈਆ।

ਗੁਜਰੀ ਕਿਹਾ ਦਰਸ ਕਿਸ ਤਹਾਂ ਮੁਲਲਣਾ, ਮੁਲਲ ਵਿਚਚ ਹੋਏ ਲੋਕਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ
ਬਿਨ ਗੁਰਮੁਖਾਂ ਤੋਂ ਸਾਚੇ ਕਂਡੇ ਕਿਸੇ ਨਹੀਂ ਤੁਲਣਾ, ਕਂਡੇ ਹਤਥ ਨਾ ਕੋਈ ਰਖਾਈਆ। ਬਿਨਾਂ ਸਤਿਗੁਰ
ਸ਼ਬਦ ਕਿਸੇ ਦਾ ਪੈਣਾ ਨਹੀਂ ਮੁਲਲਣਾ, ਦੀਨ ਦੁਨੀ ਦਾ ਦੁਹਾਈਆ। ਇਕ ਜਗਤ ਵਿਕਾਰੀ ਅੰਧੇਰ ਝੁਲਣਾ,
ਚਾਰੋਂ ਕੁਣਟ ਦਏ ਹਿਲਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਮੇਹਰ ਨਜ਼ਰ
ਇਕ ਉਠਾਈਆ।

गुजरी किहा हाए किस तरां पार करां दरवाजा, पिच्छे मुड़ ध्यान लगाईआ । गोबिन्द किहा अग्गे वेरव तेरा गरीब निवाजा, सचरवण्ड निवासी बैठा डेरा लाईआ । जेहङ्गा तेरे पुत नालों पोतरयां नूं पहलों मारे वाजां, शब्दी हुक्म इक्क दृढ़ाईआ । जिस ने रचना नवां काजा, स्वार्थ परमार्थ आपणे रंग रंगाईआ । जिस दा सुनेहङ्गा दे के आया नानक विच्च बगदादा, बदी वाले सर्ब समझाईआ । उस दा रखेल वेरवणा तमाशा, तमाशबीन हो के आपणी कार कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरवाईआ ।

गुजरी कहे किड्हा सोहणा पुर अनन्द, सोहणयां दित्ता बणाईआ । अज्ज कर दरवाजे बन्द, कीती सर्ब जुदाईआ । गोबिन्द किहा ओ जगत माता गाईए ओस दा छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नजर कोई ना आईआ । जिस ने दित्ता एह जीउ पिण्ड, पंज तत्त करी कुड़माईआ । दे के धारा अमृत सिंध, सागर वहण दित्ता वहाईआ । उह गुजरीए हुण नहीं तेरी बिन्द, पुरख अकाल मेरा पिता माईआ । एह तत्तां वाली तेरे पिच्छे भेज देणी आपणी जिंद, जिंदगी गुरमुखां लेरवे आईआ । फेर प्रगट हो के औणा विच्च हिन्द, हिन्दू तुरक दा लेरवा देणा मुकाईआ । जेहङ्गी रबाब सतिगुर नानक वजाई किंग, किंगरे किंगरे देणी खड़काईआ । जगत माता इक्क गल्ल पहलों मेरी सारयां करनी निन्द, निन्दक बणे लोकाईआ । जिस वेले मेरा मालक पुरख अकाल हुक्म देवे मरगिन्द, फरमाण धुर वडयाईआ । फेर ना मैनूं ना मेरे भगतां नूं किसे नूं रहे कोई चिन्द, चिन्ता देणी गवाईआ । चरनां हेठ बहि के कोटन कोट सुरपत राजा इन्द, विष्ण ब्रह्मा शिव उंगली दे इशारे नाल भवाईआ । पर भगतां गुरसिखां साचे सन्ता दा बण बखशिंद, बखशिश आपणे हत्थ रखाईआ । दीन दुनी चार कुण्ट दह दिशा नव खण्ड सत्त दीप इक्क लगाए हुक्म दी निककी जिही चिणग, सारी सृष्टी देणी जलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ ।

गुर अवतार पैगग्बर कहण असीं आ गए भज्जे, भजन बन्दगी छड्ही सर्ब लोकाईआ । उह पुरख अकाल परवरदिगार सांझा यार साडे पङ्गदे कज्जे, ओढन आपणा सीस टिकाईआ । फिर असीं ओसे दे हुक्म दे बद्धे, चलीए सच रजाईआ । ओसे दे हुक्म नाल आ गए सद्दे, बैठे पन्ध मुकाईआ । गुर अवतार पैगग्बर सारे कहण असीं अज्ज खा खा रज्जे, उठण दी वाह ना राईआ । साडे पेट भर थप्पे, चरनां भार ना कोई उठाईआ । गोबिन्द किहा जरा तकको सार अग्गे, पंज तत्त बैठा रघुपत नजरी आईआ । भज्जो नब्बो दौङ्गो जेहङ्गे मार्ग तुहानूं दस्से, जा के वेरवो थाऊँ बाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वारता इबारतां वाली ना कोई लिखाईआ ।

गुर अवतार पैगग्बरो कोई हुण पढ़नी नहीं अलफ ये, कलम शाही ना रंग रंगाईआ । सिध्धा लौणा परवरदिगार नाल नेंह, दूजे संग अंग ना कोई जुड़ाईआ । तन माटी उह किथ्थे गई जेहङ्गी कीती रवेह, खालस रूप निरगुण जोत बिन वरन गोत बिन काया किले कोट सचरवण्ड दवार एकंकार परवरदिगार सांझे यार आपणे विच्च मिलाईआ । दस्सो तुहाढु किधर

ਗਏ ਧਾਰ, ਜੇਹੜੇ ਬਣਾਏ ਹੋਣਹਾਰ, ਜਗਤ ਦੇ ਸਿਕਦਾਰ, ਤਤਾਂ ਦੇ ਦਿਲਦਾਰ, ਸਚ੍ਚੇ ਦਰਬਾਰ ਨਜ਼ਰ
ਕੋਈ ਨਾ ਪਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਧੁਰ ਦਾ ਹੁਕਮ ਇਕਕ ਵਰਤਾਈਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰ ਕਹਣ ਅਸੀਂ ਦਸ਼ਸੀਏ ਕੀਹਨੂੰ, ਹੋਰ ਕੋਈ ਸੁਣਨ ਵਾਲਾ ਨਜ਼ਰ ਕੋਈ
ਨਾ ਆਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਕਹੇ ਓ ਕੀ ਲਭਣ ਚਲੇ ਮੈਨੂੰ, ਤੇ ਮਮਤਾ ਜਗਤ ਰਖੋਜ ਰਖੋਜਾਈਆ।
ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਨਹੀਂ ਮੈਂ ਸਭ ਦੀਆਂ ਹਵਾਂ ਭਨੂੰ, ਵੱਡ ਰਹੇ ਨਾ ਕੋਈ ਲੋਕਾਈਆ। ਜੋ ਅਡਿਆ ਓਸੇ
ਨੂੰ ਸ਼ਬਦ ਦੇ ਹੁਕਮ ਨਾਲ ਡਨੂੰ, ਭੇਕਾ ਵਜੇ ਬੇਪਰਵਾਹੀਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ
ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਾਚਾ ਹੁਕਮ ਇਕਕ ਵਰਤਾਈਆ।

ਗੁਜਰੀ ਕਹੇ ਜ਼ਰਾ ਆਜਾ ਨੇਡੇ ਝੁਕ, ਕਨਨ ਨਾਲ ਸੁਰਖ ਲਗਾਈਆ। ਕੀ ਸਾਡਾ ਦਾਣਾ ਪਾਣੀ
ਏਥੋਂ ਗਿਆ ਸੁਕਕ, ਮੈਨੂੰ ਦੇ ਸਮਝਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਨਹੀਂ ਨਹੀਂ ਏਹ ਰਖੇਲ ਓਸੇ ਦਾ ਜਿਸ
ਦਾ ਮੈਂ ਬਣਯਾ ਪੁੱਤ, ਪਿਤਾ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਤੂੰ ਪਢ ਲੈ ਓਸੇ ਦੀ ਤੁਕ, ਕਨਨ ਵਿਚਚ
ਗੋਬਿੰਦ ਸੋਹੱ ਢੋਲਾ ਦਿੱਤਾ ਸੁਣਾਈਆ। ਗੁਜਰੀ ਸੁਣ ਕੇ ਹੋ ਗੈਂਡ ਚੁਪਪ, ਅਨਨਦ ਵਿਚ, ਪਰਮਾਨੰਦ
ਵਿਚ, ਸਤਿ ਦੇ ਚਨਦ ਵਿਚ, ਦੀਨ ਦਿਨ ਬਖ਼ਾਂਦ ਵਿਚ, ਬਿਨ ਧਿਆਨ ਗੈਂਡ ਸਮਾਈਆ। ਬਾਹਰ ਸੁਣੇ
ਨਾ ਕੋਈ ਡਣਡ, ਸੂਰਮੇ ਇਕ ਦੁਜੇ ਦੀ ਵਹੁਣ ਕੱਡ, ਨਾਲੇ ਗਾਵਣ ਢੋਲੇ ਛਨ੍ਦ, ਗੋਬਿੰਦ ਉਚੀ ਚੜ੍ਹ
ਕੇ ਵੇਰਵੇ ਜਾਂਗ, ਜਗਤ ਨਜ਼ਰ ਕਿਸੇ ਨਾ ਆਈਆ। ਏਹ ਸੋਹਣਾ ਪੁਰ ਅਨਨਦ, ਜਿਸ ਨੇ ਭਗਤਾਂ ਦੀ
ਮੰਗੀ ਮੰਗ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਕਾਰਨ ਆਵੇ ਸੂਰਾ ਸਰਬਗ, ਸੁਤਤਿਆਂ ਲਾਏ ਜਗਾਈਆ। ਗੁਜਰੀ ਕਿਹਾ ਤਹ ਕੇਹੜਾ
ਫੰਗ, ਤਰੀਕਾ ਦੇ ਦਰਸਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਜਿਧਰ ਵੇਰਵ ਵੇਰਵ ਵੇਰਵ ਜਗਤ ਮਾਤਾ ਤਿੰਨ ਵਾਰ
ਬਚਨ ਕਹ ਕੇ ਦਿਤਾ ਦਸ਼ਸ, ਰਖਾਲੀ ਨਜ਼ਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਈਆ। ਕੀ ਹੋਧਾ ਜੇ ਤੂੰ ਮੈਨੂੰ ਸ਼ਿਕਸ਼ਾ ਵਿਚਾਂ
ਤਤਾਂ ਵਾਲਾ ਗੋਬਿੰਦ ਜਸ਼ਿਆ ਭਾਰ ਤਠਾਧਾ ਪੇਟ, ਰਖੇਵਟ ਰਖੇਵਟ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਇਕਕੋ ਧੁਰ ਦਾ ਮਾਹੀਆ।
ਜਿਸ ਨੂੰ ਮੈਂ ਅੰਦਰ ਰਿਹਾ ਚੇਤ, ਓਸ ਨਾਲ ਮੇਰਾ ਹੇਤ, ਮੈਂ ਓਸ ਦੇ ਰਣ ਵਿਚਚ ਹੋਣਾ ਰਖੇਤ, ਰਿਖਤਿਆਂ
ਦਾ ਲੇਖਾ ਦੇਣਾ ਸੁਕਾਈਆ। ਗੁਜਰੀ ਕਿਹਾ ਅਜ਼ ਚਲਿੱਤੁੰ ਕੇਹੜੇ ਪਰਦੇਸ, ਕਰ ਫਕੀਰੀ ਵੇਸ ਆਪਣਾ
ਪਨਥ ਸੁਕਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਮੈਂ ਵਰਸਣ ਚਲਲਿਆ ਭਗਤਾਂ ਦੇ ਦੇਸ, ਜਿਥੇ ਰਹਿਵਾਂ ਸਦਾ ਹਮੇਸ਼ਾ,
ਨਾ ਕੋਈ ਕਲ ਨਾ ਕਲੇਸ਼, ਜੁਗ ਚੌਕੜੀ ਸਾਰੇ ਧਾਰ ਰਕਖੇ ਦਸਮੇਸ਼, ਦਹਿ ਦਿਸ਼ਾ ਦਾ ਮਾਲਕ
ਹੋ ਕੇ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਮੇਰਾ ਸ਼ਬਦ ਸਰੂਪੀ ਪੇਚ, ਪੇਚਾਦਾਰੀ ਜਗਤ ਦਿਆਂ ਗਵਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ
ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਵੇਲਾ ਰੰਗ ਰਿਹਾ ਰੰਗਾਈਆ।

ਗੁਜਰੀ ਕਹੇ ਦਸ਼ਸ ਕੇਹੜੇ ਚਲੀਏ ਰਾਹ, ਰਸਤਾ ਦੇ ਸਮਝਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਪਿਚਲਾ ਲਿਆ
ਭਵਾ, ਹਾਂ ਹੁੰ ਨਾ ਕੋਈ ਸੁਣਾਈਆ। ਜਿਧਰ ਰਖੜੇ ਬੇਪਰਵਾਹ, ਓਧਰ ਜਾਣਾ ਚਾਈ ਚਾਈਆ। ਮੈਂ
ਅਜ਼ ਤੋਂ ਓਸੇ ਦੀ ਭੇਟਾ ਦਿੱਤਾ ਕਰਾ, ਆਪਣਾ ਸਾਂਗ ਨਾ ਕੋਈ ਬਣਾਈਆ। ਨਾਤਾ ਲਿਆ ਤੁਡਾ,
ਕੀਤੀ ਜਗਤ ਜੁਦਾਈਆ। ਅਗਲਾ ਰਖੇਲ ਕਰੇ ਜਿਸ ਨੂੰ ਜਾਣੇ ਕੋਈ ਨਾ, ਲੇਖਾ ਲਿਖਵਤ ਨਾ ਕੋਈ
ਦ੃ਢਾਈਆ। ਹੁਕਮੇ ਅੰਦਰ ਦਿਆਂ ਸੁਣਾ, ਸ਼ਬਦ ਨੂਰ ਖੁਦਾਈਆ। ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਨੀਹਾਂ ਹੇਠ ਦੇਣਾ ਦਬਾ,
ਤੇਰੀ ਝੋਲੀ ਪਾਈਆ। ਦੋਹਾਂ ਨੂੰ ਮੈਦਾਨ ਵਿਚਚ ਸੂਰਬੀਰ ਦਿਆਂ ਬਣਾ, ਸੁਰ ਨਰ ਝੁਕਣ ਥਾਈ ਥਾਈਆ।
ਆਪ ਆਪਣਾ ਆਪਣੇ ਦੇ ਲੇਖੇ ਲਾ, ਲਾਯਕ ਪੁੱਤਰ ਹੋ ਕੇ ਸੇਵ ਕਮਾਈਆ। ਗੁਰਮੁਖ ਸਜ਼ਜਣ ਸਾਰੇ
ਦੇਣੇ ਤਜਾ, ਲਥਕਰ ਘੋੜਾ ਨਜ਼ਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਈਆ। ਨੰਗੀ ਪੈਂਹੀ ਭਜ਼ਣਾ ਵਾਹੋ ਦਾਹ, ਚੀਥੜ
ਪੁਰਾਣੇ ਰਿਹਾ ਵਰਵਾਈਆ। ਸੂਲਾਂ ਸੇਜ ਸਤਥਰ ਲੈਣਾ ਹੰਦਾ, ਧਾਰਡਾ ਸੇਜ ਇਕਕ ਬਣਾਈਆ। ਇਕ

ਸੁਨੇਹੜਾ ਦੇਣਾ ਸੁਣਾ, ਅਨਸੁਣਤ ਆਪ ਸਮਯਾਈਆ। ਤੇਰੀ ਖੇਲ ਮੇਰੇ ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹ, ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਨਾਲ ਪੂਰ ਕਰਾਈਆ। ਜੇ ਸੁਣੋਂ ਤੇ ਚਢੇ ਚਾ, ਚਾਓੇ ਘਨੇਰਾ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਮੇਹਰ ਨਜਰ ਇਕ ਉਠਾਈਆ।

ਗੁਜਰੀ ਕਿਹਾ ਏਹ ਕੀ ਦੱਸਧਾ ਹਾਲ, ਵਾਜ ਪੁਛ ਪੁਛ ਦਿੱਤੀ ਲਗਾਈਆ। ਵੇਰਵੀਂ ਮੈਨੂੰ ਅਕਖਾਂ ਨਾਲ ਨਾ ਦੇਈ ਵਰਵਾਲ, ਮੈਥੋਂ ਝਲਲੀ ਨਾ ਜਾਏ ਜੁਦਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਛਡੁ ਦੇ ਕੂੜਾ ਜੰਜਾਲ, ਸਮਤਾ ਮੋਹ ਨਾ ਕੋਈ ਵਧਾਈਆ। ਧੁਰ ਦਾ ਹੁਕਮ ਲੈਣਾ ਪਾਲ, ਪਾਲ ਸਿੱਘ ਦਾ ਲੇਖਾ ਫੇਰ ਬਣਾਈਆ। ਤਤਾਂ ਵਾਲਾ ਓਸੇ ਦਾ ਬਾਲ, ਬਣ ਬਹਾਦਰ ਤੇਗ ਚਲਾਈਆ। ਫੇਰ ਫਲ ਲਗੇ ਸਾਚੇ ਭਾਲ, ਭਾਲੀ ਭਾਲੀ ਰੰਗ ਚਢਾਈਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਕਲਿਜੁਗ ਸਭ ਦੇ ਸਿਰ ਤੇ ਕੂਕੇ ਕਾਲ, ਹੁਕਮ ਸਾਰੇ ਜਾਣ ਮੁਲਾਈਆ। ਧਰਮ ਰਹੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਧਰਮਸਾਲ, ਗੁਰਦਵਾਰ ਦੁਆਰ ਨਾ ਕੋਈ ਵਡਧਾਈਆ। ਕਿਸੇ ਕਮ ਨਾ ਆਵੇ ਢਾਲ ਤਲਵਾਰ, ਦਗੇਦਾਰ ਦਿਸੇ ਲੋਕਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਮੇਰਾ ਬਚਨ ਕੋਈ ਨਾ ਸਕੇ ਪਾਲ, ਸਚ ਰੂਪ ਨਾ ਕੋਈ ਸਮਾਈਆ। ਸ੍ਰ਷ਟੀ ਦੀ ਵ੃਷ਟੀ ਹੋਏ ਬੇਹਾਲ, ਚਾਰੋਂ ਕੁਣਟ ਕੂਕੂ ਕੁਰਲਾਈਆ। ਜੇਹੜਾ ਸਤਿਗੁਰ ਸ਼ਬਦ ਦਲਾਲ, ਉਹ ਮੇਰਾ ਰੂਪ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਭਗਤ ਸੁਹੇਲੇ ਲਏ ਭਾਲ, ਚੁਰਾਸੀ ਵਿਚਵੋਂ ਲਏ ਤਲਾਲ, ਸਭ ਦਾ ਪੂਰਾ ਕਰੇ ਸਵਾਲ, ਜੋ ਸਵਾਲੀ ਦਰ ਤੇ ਆਈਆ। ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਬਰਾਂ ਰਹੇ ਨਾ ਕੋਈ ਮਜਾਲ, ਸਿਰ ਸਕੇ ਨਾ ਕੋਈ ਉਠਾਈਆ। ਜਿਥੇ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਸਾਂਝਾ ਵਜ਼ੇ ਤਾਲ, ਤਲਵਾੜਾ ਇਕਕੋ ਦਾ ਵਰਵਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਕਰੇ ਖੇਲ ਸਾਚਾ ਹਰਿ, ਸਾਚੀ ਕਰਨੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਮੇਰੇ ਸੂਰਬੀਰ ਬਹਾਦਰ, ਜੋਧੇ ਗੁਰਮੁਖ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਾਂਗ ਬਹਾਦਰ ਦੇਵੇ ਆਦਰ, ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਲੋਂ ਸ਼ਹੀਦੀ ਪਾ ਕੇ ਉਸੀਦਾਂ ਵਿਚਵ ਆਸ ਰਖਾਈਆ। ਓਸ ਦੇ ਉਤੇ ਚਿਣ੍ਹੀ ਚਾਦਰ, ਓਸ ਦਾ ਮਾਲਕ ਕਰੀਮ ਕਾਦਰ, ਕੁਦਰਤ ਦਾ ਕਰਤਾ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਚ ਦੇਵੇ ਮਾਣ ਵਡਧਾਈਆ।

ਅਨਨਦ ਪੁਰੀ ਵਿਚਵੋਂ ਗੋਬਿੰਦ ਤੁਰਨ ਲਗਾ, ਲਗੇ ਬੜੇ ਨਾਲ ਮਿਲਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਨੇ ਦਿੱਤਾ ਸਦਾ, ਧੁਰ ਫਰਮਾਣ ਵ੃ਢਾਈਆ। ਗਲੋਂ ਚੋਲਾ ਲਾਹ ਦੇ ਝਗਗਾ, ਅੰਤ ਅੱਖੀਰੀ ਤੇਰਾ ਵੇਖ ਵਰਵਾਈਆ। ਆਪਣਾ ਆਪ ਕਰ ਦੇ ਨਾਂਗਾ, ਸੋਹਣਾ ਰੰਗ ਚਢਾਈਆ। ਮੇਰੇ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਲੈ ਮਜਾ, ਰਸ ਵੇਖ ਨੂਰ ਖੁਦਾਈਆ। ਤੇਰੇ ਕੌਲ ਨਹੀਂ ਔਣੀ ਕਜਾ, ਦੋ ਜਹਾਨ ਤੇਰੇ ਚਰਨਾਂ ਹੇਠ ਦਬਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਇਕਕੋ ਨੂਰ ਦੀਪਕ ਜੋਤ ਜਗਾ, ਦੋ ਜਹਾਨ ਕਰੇ ਰੁਸ਼ਨਾਈਆ। ਵੇਰਵੀਂ ਮੇਰਾਂ ਭਗਤਾਂ ਨਾਲ ਕਦੇ ਨਾ ਕਰੀਂ ਦਗਾ, ਦਗੇਬਾਜੀ ਦੀਨ ਦੁਨਿਯਾਂ ਵਿਚਵੋਂ ਦੇਣੀ ਕਢਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਦੇਵਣਹਾਰ ਮਾਣ ਵਡਧਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਪ੍ਰਭੂ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਪੁਤਰ ਬਾਲ ਜਵਾਨ, ਸੋਹਣਾ ਬਾਂਕਾ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਜਦੋਂ ਵੇਰਵੇਂ ਨੌਜਵਾਨ, ਜੋਬਨਵਨਤਾ ਸੋਭਾ ਪਾਈਆ। ਸ੍ਰ਷ਟ ਸਬਾਈ ਬਣਾਵਾਂ ਇਕ ਮੈਦਾਨ, ਮਧ ਵਿਚਵ ਦੂਜਾ ਸਾਂਗ ਨਾ ਕੋਈ ਰਲਾਈਆ। ਹੁਕਮ ਤੇਰਾ ਮੇਰਾ ਹੋਏ ਫਰਮਾਣ, ਫੁਰਨਾ ਸਭ ਦਾ ਬਨਦ ਕਰਾਈਆ। ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਰਹਣਾ ਨਿਗਾਹਬਾਨ, ਨੇਤ੍ਰ ਅਕਖ ਖੁਲਾਈਆ। ਮੈਂ ਕਿਸੇ ਦੀ ਮਨਣੀ ਨਹੀਂ ਆਣ, ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਬਰ ਤਗਲਾਂ ਨਾਲ ਭਵਾਈਆ। ਏਹ ਕੋਈ ਕਥਾ ਨਹੀਂ ਆਯਾ ਸੁਣਾਣ, ਜੋ ਵਰਤੇ ਵਰਤਮਾਨ, ਸੋ

लेखा दए वरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द दे डंके नाल सृष्ट सबाई लए उठाईआ।

गोबिन्द कहे गुजरी ना कर अन्तर कलेश, झगड़ा दे मुकाईआ। गोबिन्द तेरा रहे हमेश, जन्म मरन विच्च ना आईआ। मैं हो गिआ ओस दे पेश, जो पुशत पनाह मेरी हत्थ टिकाईआ। मैं हुण वसणा ओस दे देस, जिस नूं सचखण्ड कह के सारे रहे गाईआ। मैं आदि जुगादि जद वेखो इकक दा एक, जो भगतां देवां टेक, गुरमुखां बुद्ध करां बिबेक, त्रैगुण माया ना लावे सेक, अंदर वड के देवां भेत, ओ जगत माता गुजरी क्यों अरजन सिर विच्च पाई रेत, खुलडे केस दित्ते वरवाईआ। वेख साडे ओस ने लिखे लेख, जिस दा ना कोई रूप ते ना कोई रेख, तत्तां वाला तत्त ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एडा रंग रिहा रंगाईआ।

गोबिन्द किहा मैनूं नैण लैण दे नप्प, गुजरी दिआं जणाईआ। दो जहान लैण दे घत, पंड कूड़ लोकाईआ। नाता जोड़ लैण दे पक्क, कदे ना होवे जुदाईआ। प्रकाश कर लैण दे सच्च, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मैं मुड़ के नहीं औणा तत्तां वाला शरीर कच्च, कंचन गढ़ भन्न के खुशी मनाईआ। ओस दा लैणा रस, जो रस्ते रिहा भवाईआ। ओस दे नाल मिल के जन भगत दवारे जाणा वस, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इकक उठाईआ।

गुजरी किहा गोबिन्द मैनूं तेरा बड़ा आवे मोह, मुहब्बत नजरी आईआ। तैथों सभ कुछ लिआ खोह, अनन्द पुरी खाली दए वरवाईआ। गोबिन्द किहा जगत माता तूं वेर्खीं मेरे शहनशाह दा शहनशाही सम्मत दो, दो जहानां तों परे नजरी आईआ। जिस दी वार थित वदीआं सुदीआं वाली नहीं धारना वाली छब्बी पोह, पोह दा महीना तेरा ठर ना जाए सीना, तेरा गोबिन्द इकक नगीना, जिस दी कीमत कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग रिहा रंगाईआ।

गुजरी कहे मेरी दुधीं आ गिआ सीर, हस्स के हाल सुणाईआ। गोबिन्द किहा मेरी बदल गई तकदीर, तदबीर प्रभ जणाईआ। मैं चढ़ गिआ चोटी अखीर, जिथे मंज़ल इकको नजरी आईआ। ओथे गुर अवतार पैगंबरां दी लग्गी कोई नहीं भीड़, थल्ले बैठे सीस निवाईआ। ओथे मेरे सिर ते नहीं कोई चीर, सीस दस्तार ना कोई सुहाईआ। ना कोई कमान नजरी आवे तीर, खण्डा कटार ना कोई लटकाईआ। ना कोई मज़हबां वाली जंजीर, जगत हृद ना कोई वंडाईआ। ना कोई दुक्रव दर्द ना भीड़, चिन्ता रोग ना कोई सताईआ। ना कोई शास्त्रां ग्रन्थां दी बन्नूणी पए बीड़, ना गुंथां करे पढ़ाईआ। मैं ओस दा पीता सीर, जिस नूं श्री भगवान कह के सारे सीस निवाईआ। फेर कछु के गातरे विच्चों शमशीर, शब्द रूप जणाईआ। मैं पहनणे बस्तर नील, नीले वाला रूप वटाईआ। फेर पुरख अकाल दे अग्गे करनी इकक अपील, दित्ती सच सुणाईआ। मेरे नाल सांझी करे दलील, अग्गे नूं पुच्छण

ਗਿਚ਼ਣ ਦੀ ਲੋੜ ਰਹੇ ਨਾ ਰਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਦੇਵਣਹਾਰਾ ਸਾਚਾ ਵਰ, ਸਾਚਾ ਲੇਖਾ ਆਪ ਵਰਤਾਈਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਅਸੀਂ ਪੁਰੀ ਅਨਨਦ ਪੁਜ਼ੇ, ਵੇਲਾ ਵਕਤ ਵੇਰਵ ਵਰਖਾਈਆ। ਸਾਡੇ ਅੰਦਰ ਭੇਵ ਨਾ ਰਹੇ ਦੂਜੇ, ਦੁਤੀਆ ਰੂਪ ਨਾ ਕੋਈ ਜਣਾਈਆ। ਸਾਨੂੰ ਇਕਕੋ ਦਵਾਰਾ ਸੁਜੜੇ, ਜਿਥੇ ਵਸੇ ਧੁਰ ਦਾ ਮਾਹੀਆ। ਜਿਸ ਭੇਵ ਖੁਲਾਏ ਗੁਜੜੇ, ਫਰਮਾਣਾ ਇਕਕ ਦ੃ਢਾਈਆ। ਅਸੀਂ ਓਹਲੇ ਰਹੇ ਲੁਕੇ, ਮੈਦਾਨ ਵਿਚਕ ਕੋਈ ਨਾ ਆਈਆ। ਸਾਰਧਾਂ ਦੇ ਬੁਲਲ੍ਹ ਸੁਕਕੇ, ਕਰਬਲੇ ਵਾਲੇ ਰਹੇ ਕੁਰਲਾਈਆ। ਬਣਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਬਣਾਂ ਵਾਲੇ ਮਾਣ ਤੁਛੇ, ਤੀਰ ਕਮਾਨ ਕਨਧਯਾਂ ਤਤੇ ਉਠਾਈਆ। ਰਥਵਾਹੀਆਂ ਦੇ ਰਥ ਕਿਸੇ ਨਾ ਜੁਤੇ, ਅਸਵ ਰਾਸ ਹਤਥ ਨਾ ਕੋਈ ਫੜਾਈਆ। ਗਲਾਂ ਫਾਸੀ ਵਾਲੇ ਰਸ਼ੇ ਕਿਸੇ ਨਾ ਟੁਛੇ, ਲਟਕਦੇ ਓਸੇ ਤੜਾਂ ਨਜਰੀ ਆਈਆ। ਮੁਹਮਦ ਵਰਗੇ ਵੇਰਵੇ ਜੁਸ਼ੇ, ਤੋਬਾ ਤੋਬਾ ਦੇਣ ਦੁਹਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਤਤੋਂ ਵੇਰਵੇ ਨਾਲ ਗੁਸ਼ੇ, ਕਧੋਂ ਬੈਠੇ ਅਕਰਵ ਸ਼ਰਮਾਈਆ। ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰੋ ਤਾਅ ਦਿਤ ਮੁਢੇ, ਮੁਸ਼ਕਲ ਸਭ ਦੀ ਵੇਰਵ ਵਰਖਾਈਆ। ਹੁਣ ਕਿਸੇ ਦੇ ਰਹਣ ਨਹੀਂ ਦੇਣੇ ਨੌਰਨੇ ਉਸਤਰੇ ਵਿਚਕ ਕਢੇ, ਲਬਾਂ ਸਕੇ ਨਾ ਕੋਈ ਕਟਾਈਆ। ਵਕਤ ਵੇਲਾ ਅੱਖੀਰੀ ਢੁਕਕੇ, ਭੇਵ ਅਮੇਦ ਆਪ ਖੁਲਾਈਆ। ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰੋ ਤੁਸੀਂ ਅਜੇ ਤਕ ਇਕਕ ਦੂਜੇ ਨਾਲ (ਰੁਸ਼ੇ), ਦੀਨ ਮਜ਼ਹਬਾਂ ਵਿਚਕ ਵੱਡ ਕੇ ਝਾਗਦੇ ਵਿਚਕ ਲੋਕਾਈਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਗੋਬਿੰਦ ਦਾ ਸ਼ਬਦੀ ਨੂਰ ਫੁਛੇ, ਹੋਵੇ ਇਕ ਰੁਸ਼ਨਾਈਆ। ਓਸ ਵੇਲੇ ਭਗਤ ਬਣਨੇ ਸਚਵੇ, ਸਚ ਸਾਂਜਮ ਇਕਕ ਰਖਾਈਆ। ਗੁਰਸਿਰਖ ਰਹਣ ਨਹੀਂ ਦੇਣੇ ਲੁਕਕੇ, ਲੁਕਕਧਾਂ ਲਏ ਜਗਾਈਆ। ਸਨਤ ਸੁਹੇਲੇ ਗੁਰਮੁਖ ਸਜ਼ਿਣ ਪਾਰ ਕਰਨੇ ਸੁਕਕੇ, ਆਪਣੇ ਕਨਧ ਉਠਾਈਆ। ਆਪ ਵੱਡ ਕੇ ਦੂਜੇ ਦੇ ਜੁਸ਼ੇ, ਜਿਸਮ ਦਾ ਇਸਮ ਇਸਮ ਦੀ ਕਿਸਮ ਬਿਨ ਚਸ਼ਮ ਦੇਣੀ ਬਦਲਾਈਆ। ਲੇਖੇ ਲੈਣੇ ਅਨਡਿਛੇ, ਜੇਹੜੇ ਲੇਖ ਕਿਸੇ ਨਹੀਂ ਡਿਛੇ, ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਧੁਰ ਦਾ ਹੁਕਮ ਇਕਕ ਦ੃ਢਾਈਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰ ਕਹਣ ਅਸੀਂ ਹੋ ਗਏ ਓਹਲੇ, ਚੋਰੀ ਚੁਪਕੇ ਵੇਰਵ ਵਰਖਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਸ ਤੜਾ ਆਪਣੇ ਜੁੜੌਂਦਾ ਪੁਤੇ, ਬਚਵੇ ਛੋਟਧਾਂ ਹੁਕਮ ਸ਼ਬਦ ਕਰਾਈਆ। ਕਿਸ ਤੜਾ ਢੁਕਡੁਕ ਖਾਵੇ ਰੁੱਖੇ, ਮੁਕਖੇ ਰਹ ਕੇ ਝਟ ਲੰਘਾਈਆ। ਜਾਂ ਤਕਕਧਾ ਗੋਬਿੰਦ ਸੂਰਾ ਇਕਕੋ ਬੁਕਕੇ, ਬੁਕਕਲ ਵਿਚਕ ਸਾਰੇ ਲਏ ਛੁਪਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਦੇਵਣਹਾਰਾ ਸਾਚਾ ਵਰ, ਧੁਰ ਦਾ ਲੇਖਾ ਰਿਹਾ ਦ੃ਢਾਈਆ।

ਗੁਜਰੀ ਕਹੇ ਗੋਬਿੰਦ ਮੈਂ ਇਕ ਨੌਂ ਦਿਨ ਦੀ ਸੁਕਾ ਕੇ ਰਕਵੀ ਮੂਲੀ, ਤੁਰਨ ਲਗਿਆਂ ਮੁਖ ਸਗਨ ਦੇਵਾਂ ਲਗਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਵੇਰਵੀਂ ਜਗਤ ਮਾਤਾ ਭੋਲੀ, ਭਰਮ ਵਿਚਕ ਨਾ ਪਾਈਆ। ਏਹ ਤੇਰੀ ਮੂਲੀ ਨਹੀਂ ਮੇਰੇ ਗੁਰਮੁਖਾਂ ਦੀ ਕਈ ਜਾਏ ਸੂਲੀ, ਜਮ ਕੀ ਫਾਸੀ ਰਹਣ ਕੋਈ ਨਾ ਪਾਈਆ। ਬੇਸ਼ਕ ਏਹ ਬੱਡੀ ਸੀ ਕੂਲੀ, ਤੂੰ ਚੀਰ ਫਾੜ ਕੇ ਟੋਟੇ ਕਰਕੇ ਧੁਪੇ ਧਰ ਕੇ ਅੰਦਰਾਂ ਬਾਹਰਾਂ ਦਿੱਤੀ ਸੁਕਾਈਆ। ਮੈਂ ਮੰਜਲ ਵੇਰਖਾਂ ਚੱਡੇ ਕੇ ਜਿਥੋਂ ਮੇਰੇ ਭਗਤ ਸੁਹੇਲੇ ਔਣੇ ਪਢੇ ਕੇ, ਇਕਕੋ ਧੁਰ ਦਾ ਨਾਮ ਧਿਆਈਆ। ਹੁਣ ਤੁਸਾਂ ਸਾਰਧਾਂ ਨੇ ਭਾਣੇ ਜਾਣੇ ਜਰ ਕੇ, ਪੁਰੀ ਅਨਨਦ ਨੂੰ ਛੜ੍ਹ ਕੇ, ਮੈਨੂੰ ਕਹੋ ਮੈਂ ਵਾਰੀ ਘੋਲੀ ਸਦਕੇ, ਸੇਵ ਸੇਵਾਦਾਰ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਆਪਣੇ ਰੰਗ ਵਿਚਕ ਆਪਣਾ ਰੰਗ ਵਰਖਾਈਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰ ਕਹਣ ਅਸੀਂ ਵੇਖਦਾ ਉਹ ਸਮਾਂ, ਸੋਹਣਾ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਨੂੰ ਕਹਨਦੀ ਕੀ ਅਸੀਂ, ਜੋ ਅਸਡੀ ਜਗਤ ਅਖਵਾਈਆ। ਜਿਸ ਨੇ ਜਨਮ ਦਿਤਾ ਮਾਟੀ ਚੰਮਾਂ, ਤਨ ਵਜ੍ਹੂਦ ਵਰਖਾਈਆ। ਸਾਹ ਵਾਲਾ ਵੇਖਦੀ ਦਮਾ, ਨੈਣਾਂ ਨਾਲ ਤਕਾਈਆ। ਚਿੱਤਾ ਵਿਚਕ ਕਰੇ ਗਸਮਾਂ, ਗਸਮੀਨ ਹੋ ਕੇ ਆਪਣਾ ਅੰਦਰ ਆਪਣੇ ਵਿਚਕ ਵਰਖਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਗੁਜਰੀ ਕੋਈ ਨਾ ਕਰੀਂ ਤਮਾਂ, ਤਮਨਾ ਜਗਤ ਨਾ ਕੋਈ ਰਖਵਾਈਆ। ਮੇਰਾ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦੀਨ ਦਿਨ ਮੈਨੂੰ ਕਰਦਾ ਮਨ੍ਨਾ, ਧੁਰ ਫਰਮਾਣਾ ਇਕ ਸੁਣਾਈਆ। ਓ ਉਠ ਮੇਰੇ ਲਾਡਲੇ ਚਨਾ, ਮੇਰਾ ਨੂਰ ਤੇਰੀ ਰੁਸ਼ਨਾਈਆ। ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਭੰਡਾਰਾ ਮੇਰੇ ਨਾਮ ਦਾ ਧਨਾ, ਧਨਾਡ ਧੁਰ ਦਾ ਦਿਤਾ ਬਣਾਈਆ। ਜਿਸ ਦੇ ਵਿਚਕ ਰਹੇ ਕੋਈ ਨਾ ਬਨ੍ਹਾ, ਲੇਖਾ ਸਭ ਦਾ ਦੇਣਾ ਮੁਕਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਏਕਾ ਚਲੇ ਹੁਕਮ ਰਿਆਈਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰ ਕਹਣ ਅਸੀਂ ਵੇਖ ਕੇ ਕੀਤੀ ਸਲਾਹ, ਇਕਥੇ ਹੋ ਕੇ ਮਤਾ ਪਕਾਈਆ। ਕੀ ਹੁਕਮ ਦੇਵੇ ਬੇਪਰਵਾਹ, ਧੁਰ ਦਾ ਮਾਲਕ ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹੀਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਜਾਓ ਆਪਣਾ ਪਕੜੀ ਰਾਹ, ਪ੍ਰਭ ਚਰਨ ਦਵਾਰੇ ਬਹਿ ਕੇ ਝਟ ਲੰਘਾਈਆ। ਮੈਂ ਕਦੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਫਨਾਹ, ਫਲ ਸਭ ਨੂੰ ਦਿਆਂ ਰਖਵਾਈਆ। ਹੁਕਮੇ ਅੰਦਰ ਕਦੇ ਕਰਾਂ ਨਾ ਨਾਂਹ, ਜੋਧਾ ਹੋ ਕੇ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨਾਈਆ। ਮੈਨੂੰ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਉਹ ਦਾਅ, ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰੋ ਚਾਰ ਜੁਗ ਨਾ ਕਿਸੇ ਸਮਯਾਈਆ। ਮੈਂ ਕੋਈ ਹਤਥ ਵਿਚਕ ਮਾਲਾ ਨਹੀਂ ਲੈਣੀ ਫਡਾ, ਮਣਕਾ ਮਣਕਾ ਨਾ ਕੋਈ ਭਵਾਈਆ। ਤਵ੍ਹਾਂ ਤੱਤੇ ਨਹੀਂ ਦੇਣੇ ਬਹਾ, ਵਹਣਾਂ ਵਿਚਕ ਨੁਹਾਈਆ। ਯਾਂਗਲਾਂ ਵਿਚਕ ਨਹੀਂ ਦੇਣੇ ਭਜਾ, ਟਿਲਲਿਆਂ ਤੱਤੇ ਚਢਾਈਆ। ਗੁਫਾ ਦੇ ਅੰਦਰ ਨਹੀਂ ਦੇਣੇ ਧਕਾ, ਅਨੰਧੇਰੇ ਧੁਪ ਛੁਪਾਈਆ। ਸਿਰ ਵਿਚਕ ਪੌਣੀ ਨਹੀਂ ਸਵਾਹ, ਅਗਨੀ ਨਾ ਕੋਈ ਤਪਾਈਆ। ਮੇਹਰ ਨਜ਼ਰ ਨਾਲ ਸਭ ਦੇ ਇਕੇ ਵਾਰ ਬਖ਼ਾ ਗੁਨਾਹ, ਤਿੰਨਾਂ ਗੁਣਾਂ ਦਾ ਡੇਰਾ ਦੇਣਾ ਢਾਹੀਆ। ਅੰਦਰ ਵੱਡ ਕੇ ਸਭ ਦੇ ਰਹਵਾਂ, ਰਿਹਾਇਸ਼ ਨਜ਼ਰ ਕਿਸੇ ਨਾ ਆਈਆ। ਸਦਾ ਪ੍ਰਭ ਦਾ ਹੁਕਮ ਲੈ ਕੇ ਆਵਾਂ ਨਵਾਂ, ਪਿਛਲੀ ਕਰਾਂ ਨਾ ਕੋਈ ਪਢਾਈਆ। ਲਕਖ ਚੁਰਾਸੀ ਵਿਚਕੋਂ ਜਨ ਭਗਤਾਂ ਦੇ ਵਿਚਕ ਬਹਵਾਂ, ਦੂਜਾ ਸੰਗ ਨਾ ਕੋਈ ਰਖਵਾਈਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਪੈਗਗਬਰਾਂ ਦਾ ਅਨੱਤ ਬਦਲਿਆ ਸਮਾਂ, ਸਮਯਾ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਰਮਜ ਦਿਆਂ ਲਗਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਮੇਹਰ ਨਜ਼ਰ ਇਕ ਉਠਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰੋ ਜਾਓ ਚਲੇ, ਏਹ ਚਲਿਤਰ ਬੇਪਰਵਾਹੀਆ। ਵਸੋ ਆਪਣੇ ਜਾ ਮਹਲਲੇ, ਸਹਿਫਲ ਲਤ ਲਗਾਈਆ। ਤੁਸੀਂ ਸਦਾ ਆਏ ਸੁਣ ਲਤ ਕਲਲੇ ਕਲਲੇ, ਕਲਮਯਾਂ ਵਿਚਕ ਪ੍ਰਭ ਨੂੰ ਗਏ ਗਾਈਆ। ਮੇਰਾ ਦਵਾਰਾ ਏਕਕਾਰਾ ਪਰਵਰਦਿਗਾਰਾ ਹਰਿ ਨਿਰੱਕਾਰਾ ਸਾਂਝਾ ਧਾਰਾ ਸਾਂਝਾ ਧਾਰ ਹੋ ਕੇ ਮਲਲੇ, ਇਕ ਤੋਂ ਦੋ ਦੋ ਤੋਂ ਇਕਕ, ਦੋਹਾਂ ਦੀ ਪੂਰੀ ਸਿਕ, ਜਿਸ ਦਾ ਲੇਖਾ ਸਕੇ ਨਾ ਕੋਈ ਲਿਖ, ਲਿਖਤਾਂ ਵਿਚਕ ਬਨਦ ਨਾ ਕੋਈ ਕਰਾਈਆ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਦੇ ਕੇ ਅਕਰਵਰਾਂ ਵਾਲੀ ਨਿਕਕੀ ਜਿਹੀ ਚਿਛੂ, ਸਮਯਾ ਕੇ ਇਕ ਦੂਜੇ ਨੂੰ ਦਿਤ ਮਿਟ, ਪਿਛੂ ਪਿਛੂ ਮਰਦੀ ਰਹੇ ਲੋਕਾਈਆ। ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰ ਪਰਮਾਨੰਦ ਗੋਬਿੰਦ ਵਲ੍ਲੇ ਤਕਕਣ ਬਿਟ ਬਿਟ, ਅਕਰਵਾਂ ਅਕਰਵਾਂ ਪਿਛੇ ਛੁਪਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਔਣ ਲਗਿਆਂ ਅਨਨਦ ਪੁਰੀ ਦੀ ਪੁਟ ਕੇ ਇਕ ਇਛੂ, ਆਪਣੇ ਚੌਲੇ ਅੰਦਰ ਲਈ ਛੁਪਾਈਆ। ਸਰਸੇ ਵਿਚਕੋਂ ਆ ਕੇ ਉਹਦੇ ਤੱਤੇ ਪਾਈ ਇਕ ਛਿਟ, ਤੁਬਕਾ ਤੁਂਗਲੀ ਨਾਲ ਚਰਾਈਆ। ਉਹ ਰੋ ਕੇ ਪਈ ਪਿਛੂ, ਦਿੱਤੀ ਅਨੱਤ ਦੁਹਾਈਆ। ਮੇਰਾ ਲੇਖਾ ਅਗਲਾ ਦੇ ਲਿਖ, ਤੇਰੇ ਹਤਥ ਵਡਧਾਈਆ। ਮੈਨੂੰ ਦਿਸਦਾ ਤੈਥੋਂ ਵਿਛੜ ਜਾਣੇ ਸਾਰੇ ਸਿਖ, ਅਗਲਾ ਸਾਥ ਨਾ ਕੋਈ ਦਸਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਨਹੀਂ

ਮेरੀ ਮੇਰੇ ਗੁਰਮੁਖਾਂ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਵਿਥ, ਹਿੱਸਾ ਵੰਡ ਨਾ ਕੋਈ ਵੰਡਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਨੇ ਕਮਰਕਸਾ ਲਿਆ ਰਿਵਚਚ, ਸਜ਼ਾ ਚਰਨ ਤਿੰਨ ਵਾਰ ਠੁਕਰਾਈਆ। ਤੈਨੂੰ ਓਥੇ ਦੇਵਾਂ ਸੁਣ੍ਹ, ਜਿਥੇ ਚਾਰ ਵਰਨ ਸੀਸ ਨਿਵਾਈਆ। ਦੀਨ ਮਜ਼ਹਬ ਦੀ ਰਹੇ ਨਾ ਕੋਈ ਮਿਟ, ਭਗਤ ਦਵਾਰਾ ਕਹ ਕੇ ਸਾਰੇ ਢੋਲਾ ਗਾਈਆ। ਫਿਰ ਆਵਾਂ ਉਹਦੇ ਵਿਚ, ਨਾਲ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਮਿਲਾਈਆ। ਗੁਰਮੁਖ ਰਹਣ ਨਾ ਦੇਵਾਂ ਕੋਈ ਜਿਚ, ਚੁਰਾਸੀ ਦਾ ਗੇੜ ਨਾ ਕੋਈ ਭਵਾਈਆ। ਸਭ ਦੇ ਅੰਦਰ ਬਿਨਾਂ ਮਨਦਰ ਅਨੰਧੇਰੀ ਕੰਦਰ ਤੋੜ ਕੇ ਜਾਂਦਰ ਆਪਣੇ ਨਾਮ ਦੀ ਲਕੀਰ ਦੇਵਾਂ ਰਿਚ, ਲਾਈਨ ਐਨ ਗੈਨ ਸ਼ਾਸਤਰ ਸਿਮਰਤ ਵੇਦ ਪੁਰਾਨ ਰਮਾਇਣ ਅੰਜੀਲ ਕੁਰਾਨ ਵਰਖਾ ਨਾ ਸਕੇ ਤਿਸ, ਗ੍ਰਥਾਂ ਵਿਚਾਂ ਗਿਰਹ ਨਾ ਕੋਈ ਸਮਯਾਈਆ। ਕਛੁ ਕੇ ਵਿਚਾਂ ਕੂਝੇ ਵਹਣ, ਸਾਚੀ ਸਾਂਗਤ ਵਿਚਚ ਦਸ਼ਾਂ ਬਹਿਣ, ਊੱਚ ਨੀਚ ਰਹੇ ਨਾ ਕੋਈ ਤਰਫ਼ੈਨ, ਸਾਰੇ ਬਣਾ ਕੇ ਭਾਈ ਭੈਣ, ਆਪਣੇ ਰੰਗ ਦਿਆਂ ਰੰਗਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਭੇਵ ਅਭੇਦਾ ਦਏ ਖੁਲ੍ਹਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਹੇ ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰੋ ਜਾਓ ਓਸ ਦੇ ਪਾਸ, ਜੋ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਅਖਵਾਈਆ। ਏਹ ਮੇਰਾ ਇਕਲੇ ਦਾ ਕਮਮ ਖਾਸ, ਕਮਰਕਸਾ ਦਿੱਤਾ ਰਿਵਚਾਈਆ। ਮੈਨੂੰ ਕਿਸੇ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਸਭ ਨੂੰ ਦਿੱਤਾ ਜਵਾਬ, ਪਹੁੰਚੋ ਧੁਰਦਰਗਾਹੀਆ। ਮੈਂ ਇਕਕੋ ਨੂੰ ਕਰਨਾ ਆਦਾਬ, ਇਕਕੋ ਨੂੰ ਸੀਸ ਨਿਵਾਈਆ। ਇਕਕੋ ਰਕਰੇ ਲਾਜ, ਇਕਕੋ ਬੇਪਰਵਾਹੀਆ। ਓਸੇ ਨੇ ਰਚਿਆ ਕਾਜ, ਉਹੋ ਵੇਰਖ ਵਰਖਾਈਆ। ਜਿਸ ਦਾ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਸ਼ਬਦ ਇਕਕ ਸਮਾਜ, ਦੂਜਾ ਸਚ ਨਾ ਕੋਈ ਜਣਾਈਆ। ਮੈਂ ਓਸੇ ਦਾ ਸੁਹਤਾਜ, ਦੂਜਾ ਸਾਂਗ ਨਾ ਕੋਈ ਰਖਾਈਆ। ਮੈਨੂੰ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋਈ ਆਜ, ਸਭ ਨੂੰ ਦਿਆਂ ਵ੃ਢਾਈਆ। ਓ ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰੋ ਮੈਂ ਕੋਈ ਲੂਲਾ ਲੰਗਡਾ ਨਹੀਂ ਅਪਹਾਜ, ਸੂਰਬੀਰ ਸੋਹਣਾ ਬਾਂਕਾ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਬਿਨਾ ਮੇਰੇ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦਾ, ਕੋਟ ਸਚਖਣਡ ਦਾ, ਬ੍ਰਹਮਣਡ ਦਾ, ਜੇਰਜ ਅੰਡ ਦਾ, ਉਤਭਜ ਸੇਤਜ ਦਾ, ਆਤਮਾ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ, ਨਿਰਗੁਣ ਸਰਗੁਣ ਦਾ, ਤਤ ਸਰੀਰ ਦਾ, ਬੇਨਜੀਰ ਦਾ, ਸ਼ਾਹ ਹਕੀਰ ਦਾ, ਪੰਜ ਪੀਰ ਦਾ, ਕਦੇ ਨਾ ਚਲੇ ਰਾਜ, ਹਕੂਮਤ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਸਤਿਗੁਰ ਸ਼ਬਦ ਬਿਨਾ ਨਜ਼ਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਈਆ। ਏਹ ਕੋਈ ਲੇਖਾ ਨਹੀਂ ਚਾਲਾਕ ਦਾ, ਕੋਈ ਹਿਸਾਬ ਨਹੀਂ ਕਲਮ ਦਵਾਤ ਦਾ, ਏਹ ਕੋਈ ਝਾਗਢਾ ਨਹੀਂ ਸ਼ਿਵਦਵਾਲੇ ਮਨਦਰ ਮਿਲਿਜਦ ਮਛੂ ਮਹਿਰਾਬ ਦਾ, ਏਹ ਕੋਈ ਹੁਕਮ ਨਹੀਂ ਦੋਜਖ ਬਹਿਸਤ ਪੁੱਨ ਸਵਾਬ ਦਾ, ਏਹ ਖੇਲ ਓਸ ਹਕੀਕੀ ਜਨਾਬ ਦਾ, ਜੋ ਲਾਸ਼ਰੀਕ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਗਬਰ ਕਹਣ ਸਾਡੀ ਅੰਤਮ ਫ਼ਤਿਹ, ਗੋਬਿੰਦ ਚਲੇ ਪੀਠ ਭਵਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਪ੍ਰਭ ਦਾ ਸੁਤ ਦੁਲਾਰਾ ਇਕਕੋ ਗਜ਼ੇ, ਗਜ਼ਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਰਹੇ ਨਾ ਰਾਈਆ। ਜਿਸ ਦਾ ਨੂਰ ਦੋ ਜਹਾਨ ਜਗੇ, ਮੇਰੇ ਅੰਦਰ ਕਰੇ ਰੁਸ਼ਨਾਈਆ। ਮੈਂ ਕੋਈ ਗੋਬਿੰਦ ਸਤਿਗੁਰ ਬਣ ਕੇ ਸੌਣ ਨਹੀਂ ਆਯਾ ਤਤੇ ਕਿਸੇ ਮੰਜੇ, ਸਤਥਰ ਧਾਰਡਾ ਸੇਜ ਹੰਡਾਈਆ। ਜਿਸ ਨੇ ਮੇਰੇ ਪੜਦੇ ਕਜ਼ੇ, ਕਾਧਮ ਸੁਕਾਮ ਬੈਠਾ ਦਰਗਾਹ ਸਾਚੀ ਸੋਭਾ ਪਾਈਆ। ਸਾਰੇ ਓਸੇ ਦੇ ਹੁਕਮ ਅੰਦਰ ਤੁਸੀਂ ਆਏ ਬਦੇ, ਬਨਦਨਾ ਕਰ ਕੇ ਆਪਣਾ ਝਟ ਲੰਘਾਈਆ। ਜਿਸ ਨੇ ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਪੁਰੀ ਅਨਨਦ ਛਡਣ ਤੋਂ ਪਹਲੋਂ ਮੇਰੇ ਗਲੋਂ ਲੁਹਾਏ ਝਗ੍ਗੇ, ਪੜਦਾ ਆਪਣਾ ਤਤੇ ਪਾਈਆ। ਓਸ ਦੇ ਹੁਕਮ ਅੰਦਰ ਫੇਰ ਆਏ ਸਦੇ, ਬਸਤਰ ਪਹਨ ਵੇਰਖ ਨੈਣ ਆਪਣੀ ਅਕਰਖ ਖੁਲ੍ਹਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਧੁਰ ਦਾ ਹੁਕਮ ਇਕਕ ਸੁਣਾਈਆ।

गोबिन्द किहा माता गुजरी जगत वाली उठ, चलीए चाई चाईआ। मैनूं गाना बन ने सज्जे गुट्ठ, फड़ बाहों खुशी मनाईआ। मैं इन्हां दी जड़ देवां पुट्ठ, जेहडे दुखीआं रहे दुखाईआ। मैं भगतां गुरमुखां सभ कुछ, पहले आपणा घराना दिआं लुटाईआ। जे पुरख अकाल मैनूं लए पुच्छ, ते आपणा आप ओसे दे अगे टिकाईआ। माता जगत इक्क वेरां फेर सुण ला अनन्द पुर छड्ण लगिआं तूं पढ़ लै इक्क तुक, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नजर कोई ना आईआ। माता गुजरी जगत वाली खोलूं दे आपणी गुत्त, ध्यान पुरख अकाल वल लगाईआ। गोबिन्द ताअ दे के सज्जी मुच्छ, मुशकल भगतां पार कराईआ। कलिजुग अन्त जिस वेले कवेले दा वेला गिआ ढुक्क, भरमे भुल्ले लोकाईआ। प्यार रहे ना मात पुत, पिता पूत होए जुदाईआ। मन वासना लग्गे दुःख, तृष्णा ना कोई बुझाईआ। बिन प्रभ दी किरपा जननी भगत जणे ना आपणी कुक्ख, साचा नूर ना कोई प्रगटाईआ। साध सन्त सति विच्च मिलण वाले सारे जाणे लुक, कथा करन वाले पढ़ पढ़ आपणा झट्ठ लंधाईआ। मैं ओस धारों फेर औणा उठ, जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर बैठे लुक, आपणा आप छुपाईआ। निरगुण धार बण के सुत, सुहौणी साची रुत अबिनाशी अचुत आपणे नाल मिलाईआ। भगत सुहेले गोदी लैणे चुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अगला लेरवा आपणे हत्थ रखाईआ।

गुजरी किहा मैनूं इक्क वेरां नैणां विचो वहा लैण दे नीर, अकर्वां हौलीआं लवां कराईआ। मैनूं दुःख लग्गे जिस वेले गुरमुख घत्ती जाण वहीर, अंदरों बाहर चाई चाईआ। गोबिन्द किहा खण्डा खिच्च के मैं फेर दित्ती लकीर, एथे दा लेरवा एथे दित्ता मुकाईआ। अगे बदल देवां तकदीर, हुक्म सुणावां धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।

जगत माता सच दृढ़ावागा। हुक्म धुर दा इक्क सुणावांगा। अगला लेरवा वेरव वरवावांगा। शब्दी धार गोबिन्द अरववावांगा। पुरख अकाल नाल रलावांगा। साचा देस इक्क सुहावांगा। नर नरेश हो के फेरा पावांगा। पिछला मेट के लेरव, नूरी राह इक्क धरावांगा। भाग लगा के सम्बल देस, डंक वजावांगा। फेर कर अगम्मी खेड, सम्मत शहनशाही वरतावांगा। जेहडे अनन्द पुरी विच्चों दिते भेज, फेर आपणे नाल रलावांगा। खुशीआं नाल दे के इक्क संदेश, सोहणा सवांग आप प्रगटावांगा। सारे कर के एक दे एक, इक्को ढोला राग सुणावांगा। चरन प्रीती बख्श के टेक, टिकके धूढ़ी मस्तक सभ दे खाक रमावांगा। मैं छड़ के सचरवण्ड देस, परदेसी हो के मातलोक भगत सुहेले रंग रंगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमावांगा।

जगत माता तैनूं कैहैदे सारे गुजरी, दुध्ध पिआवण वाली बणना माईआ। तेरी अनन्द पुरी बाहरों उजडी, अंदरों वसदी नजरी आईआ। जे मेरी रमज किसे बुज्ज लई, बुझारत जुग अगे रखाईआ। एथे खेल मेरी नहीं मुक्क गई, अगला लेरवा रिहा समझाईआ। फेर मैं परत के औणा इक्क पुरख अकाल दे नाम दी तुक लई, दूजा ढोला कोई ना गाईआ।

ਇਸ ਦੇਹ ਅੰਦਰ ਬੇਨਜੀਰ ਅੰਦਰ ਬਾਹਰੋਂ ਆ ਕੇ ਭਗਤ ਦਵਾਰੇ ਵਿਚਚ ਸੁਰਖ ਲਈ, ਜਿਥੇ ਭਗਤ ਸੁਹਲੇ ਹੋ ਕੇ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨਾਈਆ। ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਬਰ ਏਹ ਭਜ਼ੇ ਆਉਣੇ ਓਥੇ ਭਗਤਾਂ ਦੇ ਟੁਕੁਕ ਲਈ, ਪਹਲੋਂ ਟੋਕਰੇ ਸਿਰਾਂ ਤੱਤੇ ਭਾਰ ਉਠਾਈਆ। ਗੁਜਰੀ ਓਸੇ ਵੇਲੇ ਖੁਸ਼ ਹੋਈ, ਖੁਸ਼ੀ ਵਿਚਚ ਤਾਲੀ ਦਿੱਤੀ ਲਗਾਈਆ। ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰੀਤੀ ਦੇ ਨਥੇ ਵਿਚਚ ਗੁਟ ਹੋਈ, ਦੁਖਡਾ ਲਿਆ ਗਵਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਨੇ ਅੰਦਰ ਵਰਖਾਯਾ ਵੇਰਖ ਦੀਨ ਦੁਨੀ ਦੀ ਲੁਝ ਹੋਈ, ਤੇਰਾ ਪੁੱਤ ਲੁਝ ਕਦੇ ਨਾ ਜਾਈਆ। ਜੇ ਆਵਾਂ ਤੇ ਗੁਰਮੁਖਾਂ ਦੇ ਸੁਰਖ ਲਈ, ਆਪਣੀ ਲੋਡ ਨਾ ਕੋਈ ਰਖਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਚ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਾਚੀ ਕਰਨੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਬਰ ਕਹਣ ਗੋਬਿੰਦ ਦਾ ਤਹ ਵਕਤ ਵੇਖਿਆ ਸੁਹਾਵਣਾ, ਸੋਹਣੀ ਖੁਸ਼ੀ ਬਣਾਈਆ। ਭਗਤਾਂ ਦਾ ਪਕਿੜਿਆਂ ਦਾਮਨਾ, ਦਾਮਨਗੀਰ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਪੂਰ ਕਰਾਈ ਕਾਮਨਾ, ਭਾਵਨਾ ਵੇਰਖ ਵਰਖਾਈਆ। ਛੱਭੀ ਪੋਹ ਰੰਗ ਰੰਗਾਵਣਾ, ਰੰਗਤ ਚੱਡੇ ਨੂਰ ਖੁਦਾਈਆ। ਸਤਾਈ ਪੋਹ ਸਭ ਨੇ ਖਾਧਾ ਰਖਾਵਣਾ, ਖਾ ਰਖਾ ਮਿਲੀ ਵਡਿਆਈਆ। ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਵਿਚਚ ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਬਰਾਂ ਭਗਤਾਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਵੱਡ ਕੇ ਕਿਹਾ ਤੁਸਾਂ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਭੰਗਡਾ ਪਾਵਣਾ, ਧੂਰ ਦੇ ਢੋਲੇ ਗਾਈਆ। ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਗੋਬਿੰਦ ਵੇਸ ਵਟਾਵਣਾ, ਪੱਡਦਾ ਦਾ ਚੁਕਾਈਆ। ਸਾਡੀ ਅੰਤ ਅਰਖੀਰੀ ਇਕਕੋ ਕਾਮਨਾ, ਉਚਚੀ ਕੂਕ ਦੇਈਏ ਫੁਫਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਚ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਿਰ ਸਭ ਦੇ ਹਤਥ ਰਖਾਈਆ।

ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਬਰ ਕਹਣ ਅਸੀਂ ਬੇਨਨਤੀ ਲਗੇ ਸੁਣਾਣ, ਸੁਣ ਬੇਪਰਖਾਹੀਆ। ਵੇਖਿਆ ਰਖੇਲ ਮਹਾਨ, ਖੁਸ਼ੀ ਧੁਰਦਰਗਾਹੀਆ। ਕਲਿਜੁਗ ਕੂਡ ਲਗਾ ਪਛਤਾਣ, ਰੋਵੇ ਮਾਰੇ ਧਾਹੀਂਆ। ਕੂਡ ਰਾਜਾ ਕੂੜੀ ਪਰਯਾ ਕੂਡਾ ਦਿਸੇ ਜਹਾਨ, ਕੂੜੀ ਸੰਬੰਧ ਲੋਕਾਈਆ। ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਬਰ ਕਹਣ ਗੋਬਿੰਦ ਜੇ ਸਭ ਦੀ ਇਕਕੋ ਵਾਰ ਲਾਹਵੇਂ ਮਕਾਣ, ਘਰ ਘਰ ਰੋਣ ਦੀ ਲੋਡ ਰਹੇ ਨਾ ਰਾਈਆ। ਸਿਆਪੇ ਕਰਨ ਜਿੱਤੋਂ ਮਾਪਿਆਂ ਦੇ ਪੁੱਤ ਮਰੇ ਜਗਾਨ, ਬੌਹੜੀ ਬੌਹੜੀ ਜਗਤ ਵਿਚਚ ਦੁਹਾਈਆ। ਅਸੀਂ ਵੇਰਖੀਏ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਨਾਲ ਕਿਸ ਬਿਧ ਵਜ੍ਜੇ ਦੋਹਤਥਡਾਂ ਵਾਲਾ ਤਾਲ, ਤਲਵਾਡਾ ਤੇਰਾ ਨਾਮ ਬਣਾਈਆ। ਮਾਝੇ ਵਾਲਿਆਂ ਦਾ ਜੇ ਬੇਦਾਵਬਾ ਦਿਤਾ ਪਾੜ, ਏਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸੁਣ ਹਾਡੇ, ਹਾਡੇ ਕਰ ਕੇ ਰਹੇ ਸੁਣਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਚ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਮੇਹਰ ਨਜ਼ਰ ਇਕਕ ਉਠਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਹੇ ਕਲਿਜੁਗ ਕੂੜੀ ਕ੍ਰਿਧਾ ਕਰੋ ਸਿਆਪਾ, ਮਾਝਾ ਪਹਲੀ ਵੰਡ ਵੰਡਾਈਆ। ਦੂਜਾ ਹੁਕਮ ਮਿਲੇ ਦੋਆਬਾ, ਦੋਹਰਾ ਤਾਲ ਵਜਾਈਆ। ਤੀਜਾ ਮਾਲਵੇ ਪੂਰਾ ਹੋਵੇ ਖੜਕਾਬਾ, ਜੋ ਡਲਲੇ ਗੋਬਿੰਦ ਗਿਆ ਸਮਝਾਈਆ। ਚੌਥੇ ਜਸ਼੍ਮੂ ਉਚਚੀ ਕੂਕ ਮਾਰੇ ਚਾਂਗਾਂ, ਬੌਹੜੀ ਬੌਹੜੀ ਕਰ ਸੁਣਾਈਆ। ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੈਗਬਰ ਕਹਣ ਸਾਡੀਆਂ ਪੂਰਨ ਹੋਵਣ ਤਾਂਧਾਂ, ਆਸਾ ਮਨਸਾ ਪੂਰ ਕਰਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਸ਼ਬਦ ਕਹੇ ਮੇਰੇ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦਾ ਏਹ ਸਵਾਂਗਾ, ਦੂਜਾ ਸਮਝੇ ਕੋਈ ਨਾ ਰਾਈਆ। ਜਨ ਭਗਤਾਂ ਭੰਗਡਾ ਪਾਧਾ ਫੱਡ ਕੇ ਸੋਟੇ ਡਾਗਾਂ, ਰਖਣਡਾ ਰਖਡਗ ਨਾਲ ਚਮਕਾਈਆ। ਬੀਬੀਆਂ ਪਿਵੱਣ ਨਾਲ ਜੋਰਾਂ ਮਾਰ ਕੇ ਚਾਂਗਾਂ, ਸੋਹਣਾ ਸਾਂਗ ਵਰਖਾਈਆ। ਏਹ ਗੋਬਿੰਦ ਦੇ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀਆਂ ਤਾਂਧਾਂ, ਅਮ੃ਤ ਰਸ ਇਕ ਵਹਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਚ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਦੇਵਣਹਾਰਾ ਸਾਚਾ ਵਰ, ਨਿਹਕਲਕ ਨਰਾਧਨ ਨਰ, ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ੇਰ ਸਿੱਧ ਵਿ਷ਨੂੰ ਭਗਵਾਨ, ਭਗਵਨ ਆਪਣਾ ਰਖੇਲ ਵਰਖਾਈਆ।

(੨੭ ਪੋਹ ਸ਼ ਸ਼ ੨)



गोबिन्द कहे मैं पुर अनन्द होया वक्खरा, वक्खरी धार चलाईआ । मैं ओहले हो के नालों अकर्खरां, अकर्वीआं तों परे डेरा लाईआ । फूड़ीआं तों दूर वछा के सथरा, सत्थर यारड़ा इक सहाईआ । नेत्र हन्ज छड़ु के अस्थरा, सति सरूपी धार वहाईआ । जगत निशाना छड़ु के पत्थरा, पत्तण मिल्या बेपरवाहीआ । खोजिआं हत्थ ना आवां जंगल जूह उजाड़ पहाड़ रकड़ा, थलां विच्च अकर्ख ना कोई मिलाईआ । सिफत दस्सां ना विच्च सतरा, महिमां गणत ना कोई वडयाईआ । सृष्टी नालों हो के बेवतना, वतन मल्लया धुर दरगाहीआ । जिस दा चार जुग करदे रहे यत्ना, यथा योग आपणी सेव कमाईआ । मैनूं चंगा लग्गा ओथे वस्सणा, जिथे वसल नूर खुदाईआ । मेरा रूप समझिआ किसे ना असला, असल भेव ना कोई चुकाईआ । रस अगम्मी जाणे कोई ना रसना, रस्ता लभे ना किसे लोकाईआ । रसना जिहा बत्ती दन्द करे कोई ना जसना, सिफतां विच्च ना सिफत सालाहीआ । मैं तज्जया दुनी वाला पटना, घर इकको वेरव वरवाईआ । जिस गृह दी कोई ना जाणे घटना, घाटी चढ़ ना पन्ध मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा धुर संग बणाईआ ।

गोबिन्द कहे मेरा कोई ना जाणे पुर अनन्द विछोड़ा, विशा समझ किसे ना आईआ । मेरा जाणे कोई ना जोड़ा, जोड़ी किस दे नाल बणाईआ । मेरा तकके कोई ना घोड़ा, जो चले वाहो दाहीआ । मैं औस दा बांका छोहरा, जिस नूं शहनशाह कह के सारे गाईआ । जिस निरगुण तों सरगुण सरसे उत्ते लाया होड़ा, सोहणी वंड वंडाईआ । हँ ब्रह्म बण के पौड़ा, मंजल आपणी दित्ती विरवाईआ । मुहब्बत प्यार दी रक्ख के लोड़ा, नाता दुनी नालों तुड़ाईआ । हुक्म दे के इकको कोरा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाईआ । माण दे के बांका छोहरा, शुहरत आपणी इक समझाईआ । कर प्रकाश अन्धेरा घोरा, नूर नूर नाल चमकाईआ । साचा बल दे के जोरा, जोरू जर ज्जेर कराईआ । पड़दा लाह के तोरा मोरा, आप आपणे अंग जुड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ ।

गोबिन्द कहे क्यों पुरी अनन्द छड़ी, नाता लिआ तुड़ाईआ । क्यों गोबिन्द चल्ली ना गद्दी, अग्गे गुरू तत्त ना कोई वडयाईआ । क्यों शब्दी धार बध्दी, हुक्मी हुक्म शनवाईआ । क्यों खेल कीता यदी, यक्क नाअरा इक सुणाईआ । एह वेला वक्त औंदा कदी, कदीम तों प्रभ दी रीती चली आईआ । मेरी धार औस नाल बध्दी, जिस नूं बन्दना कर के सारे सीस झुकाईआ । जिस दा हुक्म कदे ना होवे रद्दी, बदली विच्च ना कोई बदलाईआ । औस दे प्रेम दी सच्ची सदी, सद्दे दे के खुशी बणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म मेरे अंदर वरताईआ ।

गोबिन्द किहा क्यों होया पुर अनन्द अलग्ग, समझ किसे ना आईआ । खोज सके ना कोई जग, भेव सके ना कोई दृढ़ाईआ । राज सके ना कोई लभ, समझ विच्च ना कोई चतराईआ । जगत वासना मेट के हद्द, माया रक्खाश दित्ती तजाईआ । पुरख अकाल दा कर के हज्ज, हाजत आपणी वेरव वरवाईआ । सच दवारे मंग के मंग, मंगी खुशी राईआ । किरपा कीती सूरे सरबन्ना, मेहरवान मेहर नज्जर उठाईआ । शब्द अगम्मी हुक्म दित्ता असव

नीले नहीं कसणा तंग, जीन पारवर खुशी नाल टिकाईआ। हुक्मे अंदर दे के ढंग, तरीका अगला दित्ता समझाईआ। जगत गोबिन्द तेरा शस्त्रां वाला जंग, जगत खेल लोकाईआ। तेरा भगतां वाला अनन्द, आपणे विच्च छुपाईआ। गुरमुखां वाला संग, जोत शब्द वडयाईआ। निरगुण नूर दस्स के हँ, पारब्रह्म पडदा लाहीआ। जिस धारों आए जम्म, तन वजूद मिले वडयाईआ। भाग लगे माटी कच्च चम्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ।

गोबिन्द कहे क्यों तजिआ घर बार, घराना दित्ता तजाईआ। ओट रक्ख के इक्क यार, याराने कूड़े दित्ते मुकाईआ। प्रेम प्रीती पहन हथिआर, हथ्थ जोड़ सीस निवाईआ। पुरख अकाल रिच्च टार, करतब आपणा दित्ता दृढाईआ। इस दा लहणा देणा बरस दो चार, पंज सत्त तों वध्य ना वंड वंडाईआ। अगला खेल नाल निरँकार, निरगुण सरगुण वज्जे वधाईआ। तू मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा बणे हथिआर, जिस दी समझे कोई ना धार, कटार तलवार कम्म कोई ना आईआ। लहणा देणा मुकावे सर्ब संसार, कूड़ी क्रिया करे खुआर, गुरमुख सज्जण लए उबार, अन्तर बाहर करे प्यार, निरंतर नूर कर उजिआर, मंतर इक्क जैकार, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ। गोबिन्द कर के निमस्कार, मंगी मंग दर भिखार, सभ किछ तेरे अख्यार, देवणहारे सिरजणहार, बेपरवाह तेरी बेपरवाही तेरे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णु भगवान, निरगुण सरगुण निरगुण करे आपणी कार, करनी दा करता कायनात आपणा खेल वरवाईआ।

(۹۸ माघ शहनशाही सम्मत ۲)



गोबिन्द कहे पुरख अकाल जाणे वज्जया, शास्त्र सिमरत समझ किसे ना आईआ। जिस कारन पुरी अनन्द तजया, नाता कूड़ तुङ्गाईआ। सचखण्ड दवारे साचे सजिआ, सज्जण पाया बेपरवाहीआ। जिस दा नाम दमामा वज्जया, चोट अगम्मी लाईआ। ओसे दा आया सदिआ, घर उहो वेख्या चाई चाईआ। सच प्रेम दा वेरव के मज्जया, अनन्द आपणा लिआ बणाईआ। जिस मेरा पडदा कज्जया, ओढण सीस दित्ता टिकाईआ। ओस दे हुक्म अंदर आदि जुगादि लग्गया, दिवस रैण सेव कमाईआ। सच मुहब्बत दी पी के मध्या, मधर धुन ओसे दा नाम धिआईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सज्जण मीत मुरारा इक्को लम्भया, जिस नाल मिल के आदि जुगादि झट्ट लंघाईआ। एथे ओथे निरगुण सरगुण कदे ना करे दगिआ, दगा फरेबी दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा आपणा रंग चढाईआ।

गोबिन्द कहे क्यों छड़या जगत मन्दर, मंतव समझे कोई ना राईआ। मैं लंधिआ ओस अंदर, जिस दा कुफल बन्द ना कोई कराईआ। अगम्मी वेरवी रंगण, निरगुण नूर

जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पैगंबर कोटन मंगण, अनगिणत विष्ण ब्रह्मा शिव झोलीआं डाहीआ। पुरी अनन्द नालों मैनूं आया चंगा अनन्दन, अनन्द वेख्या धुर दरगाहीआ। साची धूढ़ी दी ला के चन्दन, मस्तक आपणी रेख बदलाईआ। बिनां हथां तों कर के बन्दन, बन्दे दी बन्दगी तों परे पारब्रह्म विच्च समाईआ। गा के ढोला छन्दन, सोहँ सरूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ।

गोविन्द कहे क्यों पुरी अनन्द विच्चों होया भगौड़ा, भाजड दिती पाईआ। इकको हथ फड़ा के डोरा, डोरी ओसे नाल जुड़ाईआ। जिस दा खेल ब्रह्मण गौड़ा, ब्रह्मा वेता समझ ना राईआ। जुग चौकड़ी जिस दा नाम वरतिआ भोरा भोरा, भोर भोर गुर अवतार पैगंबर गए खाईआ। बिनां तत्तां तों ओस दा बण्या छोहरा, बांका नूर नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म अंदर खेल वरताईआ।

गोविन्द कहे क्यों पुरी अनन्दों नड्हा, खुशीआं ढोला गाईआ। क्यों गुरसिखां सरसे खेल खेलिआ कड्हा, ख़लक पड़दा ना कोई उठाईआ। क्यों दे के धीरज हठा, सति सन्तोख दिता बंधाईआ। पुरख अकाल किस बिध मारे मेरे अंदर सड्हा, शब्दी शब्द हुक्म सुणाईआ। तेरे शरीर दा होणा वटा, बदली शब्द नाल बदलाईआ। मुड के करना पए ना रड्हा, झगड़ा झगड़ना पए ना नाल लोकाईआ। जेहड़ा मेरा नाम नूर लभ्दे रता, भोरा भोरा सर्ब वरताईआ। फिर सभ कुछ देवां तेरे हथ्यां, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। हुण छड़ दे मन्दर मुनारे इट्टां, कक्खां नाल ना कोई वडयाईआ। फिर मैं तेरे अंदर वसां, जिस नूं समझे ना कोई जगत शास्त्र शरअ वाली दुहाईआ। आपणी रचना तेरे नाल मिल के खेखां बिना अकरवां, रक्खक हो के रक्खया करां थाउँ थाईआ। कौल इकरार करां सच्चा, सच सच दिआं जणाईआ। असल विच्च वसल विच्च तूं मेरा शब्दी पूत पक्का, सुत दुलारा निरगुण नजरी आईआ। एह काया दा भाण्डा कच्चा, अन्त नाता जाए छुड़ाईआ। गोविन्द सीस नवा के किहा अच्छा, तेरे हुक्म अंदर तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुनेहड़ा इकक समझाईआ।

गोविन्द कहे अनन्द पुर छड्हदिआं कीती फरयाद, फरमांबरदार हो के सीस निवाईआ। मैनूं रस दे जो अगम्मी आदि जुगादि, जुग बदल कदे ना जाईआ। पुरख अकाल मार अवाज, धुर दी धार अंदर जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा एह गा आपणा राग, दूजा सुणन कोई ना पाईआ। सच मुहब्बत विच्च सदा रक्खणी आस, आसा विच्च भरवासा दिता बंधाईआ। मेरी पवण तेरा स्वास, तेरा स्वास मेरा प्रकाश, विच्च पृथमी आकाश सीस निवाईआ। दरसां खेल बिन तत्तां मेल निरगुण निरगुण तमाश, ख़लक हो के ख़लक विच्च खिलाईआ। मेहरवान हो के देवां शाबाश, शाह पातशाह शहनशाह हो के दिआं वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णुं भगवान, सर्ब गुणतास, गुणवन्ता गहर गम्भीर बेनज़ीर नजर तों परे, करे खेल आपणा हरे, हरी हरि हरि हरि गोविन्द हुक्म वरताईआ। (१८ माघ शहनशाही सम्मत २)



ਗੋਬਿੰਦ ਕਹੇ ਪੁਰੀ ਅਨਨਦ ਦਾ ਆਯਾ ਚੇਤਾ, ਚੇਤਨਾ ਹੋ ਕੇ ਦਿਆਂ ਜਣਾਈਆ। ਹੁਕਮ ਸੁਣਿਆ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਹੋਣਾ ਸਭ ਦਾ ਨੇਤਾ, ਨਰ ਨਿਰੱਕਾਰ ਧੁਰਦਰਗਾਹੀਆ। ਲਕਖ ਚੁਰਾਸੀ ਵੇਰਖੇ ਆਪਣੇ ਖੇਤਾ, ਚਾਰ ਕੁਣਟ ਦਹ ਦਿਸ਼ਾ ਫੇਰਾ ਪਾਈਆ। ਬ੍ਰਹਮਣਡਾ ਖਣਡਾਂ ਕਰੇ ਵੇਂਤਾ, ਪੁਰੀਆਂ ਲੋਆ ਹੁਕਮ ਵਰਤਾਈਆ। ਲਕਖ ਚੁਰਾਸੀ ਜਾਣੇ ਲੇਖਾ, ਅੰਡਜ ਜੇਰਜ ਉਤਮੁਜ ਸੇਤਜ ਫੋਲ ਫੁਲਾਈਆ। ਕੂੜੀ ਕ੍ਰਿਧਾ ਮੇਟੇ ਭੇਖਾ, ਇਕਕੋ ਢੱਕਾ ਨਾਮ ਸੁਣਾਈਆ। ਪੜਦਾ ਲਾਹੇ ਦੇਸ ਪਰਦੇਸਾ, ਦੋ ਜਹਾਨਾਂ ਭੇਵ ਚੁਕਾਈਆ ਸ਼ਾਹੋ ਭੂਪ ਬਣ ਨਰ ਨਰੇਸ਼ਾ, ਨਰ ਨਰਾਧਣ ਹੁਕਮ ਵਰਤਾਈਆ। ਜਿਸ ਨੂੰ ਸਾਰੇ ਕਰਨ ਆਦੇਸਾ, ਸਚ ਦਵਾਰੇ ਸੀਸ ਝੁਕਾਈਆ। ਸੋ ਸਦਾ ਰਹੇ ਹਮੇਸ਼ਾ, ਜੁਗ ਜੌਕੜੀ ਆਪਣੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈਆ। ਭਗਤ ਉਧਾਰਨਾ ਜਿਸਦਾ ਪੇਸ਼ਾ, ਗੁਰਮੁਖ ਆਪਣੀ ਗੋਦ ਉਠਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਥ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਆਪਣਾ ਪੜਦਾ ਦਏ ਉਠਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਪੁਰੀ ਅਨਨਦ ਅਗਮੀ ਆਈ ਰਖਬਰ, ਧੁਰ ਸਂਦੇਸ ਸੁਣਾਈਆ। ਇਸ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਦੋ ਜਹਾਨਾਂ ਤੱਤੇ ਅੰਬਰ, ਆਦਿ ਅੰਤ ਸਦਾ ਰੁਸ਼ਨਾਈਆ। ਓਸ ਦਿੱਤਾ ਪਾਲਾ ਸਬਰ, ਮਧਰ ਜਾਮ ਪਿਆਈਆ। ਰੂਧ ਦੱਸਦਾ ਅਗਮੀ ਬਬਰ, ਬਾਬਰ ਸ਼ਾਹੀ ਦਿੱਤੀ ਰਖਪਾਈਆ। ਲੇਖੇ ਲਾ ਆਪਣਾ ਬਾਂਸ ਸਰਬਾਂਸ ਟਬਰ, ਲੇਖਾ ਪਿਛਲਾ ਮੂਲ ਚੁਕਾਈਆ। ਜੇਹੜੀ ਮੰਗ ਮੁਹਮਦ ਮੰਗੀ ਵੜਨ ਲਗੇ ਵਿਚਵ ਕਬਰ, ਕਾਅਬੇ ਦੇ ਮਾਲਕ ਕਾਯਲ ਹੋ ਕੇ ਤੇਰੀ ਆਸ ਤਕਾਈਆ। ਸਦੀ ਚੌਥੀਵੀਂ ਦੇਣੀ ਬਦਲ, ਬਦਲ ਵਿਚਵ ਅਦਲ ਤੇਰਾ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਜਗਤ ਵਾਸਨਾ ਕਰ ਕਤਲ, ਨਾਮ ਰਖਣਾ ਸ਼ਮਸ਼ੀਰ ਸ਼ਰੂਅ ਕਰੇ ਸਫਾਈਆ। ਓਸ ਦਾ ਕਰਨਾ ਧਤਨ, ਧਰਾਵ ਗੋਬਿੰਦ ਸੇਵਾ ਲਾਈਆ। ਜਿਸ ਦਾ ਇਕਕੋ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦੀ ਵਤਨ, ਬੇਵਤਨ ਹੋ ਕੇ ਬੇਵਤਨਾਂ ਆਪਣੇ ਘਰ ਪੁਚਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਥ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਾਚਾ ਹੁਕਮ ਇਕਕ ਸਮਯਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਮੇਰੀ ਅੰਤ ਅੰਤਰ ਸਥਾਨ, ਸਦੀਆਂ ਦੀ ਪਿਛਲੀ ਦਿਆਂ ਜਣਾਈਆ। ਕੂੜੀ ਕ੍ਰਿਧਾ ਵੇਰਖ ਗਦਰ, ਨੇਤਰ ਨੈਣ ਅਕਰਖ ਖੁਲਾਈਆ। ਬੇਨਨੀ ਵਿਚਵ ਕਿਹਾ ਕਿਰਪਾ ਕਰ ਕਰ ਅਦਲ, ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਤੇਰੀ ਸਰਨਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਕਿਹਾ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਆਵੇਂ ਮੇਰੇ ਵਤਨ, ਘਰਾਨੇ ਡੇਰਾ ਲਾਈਆ। ਫੇਰ ਬਣਾ ਕੇ ਤੇਰਾ ਪਤਣ, ਕਿਨਾਰਾ ਧੁਰ ਦਾ ਦਿਆਂ ਸੁਹਾਈਆ। ਨਜ਼ਾਰਾ ਵੇਰਖਾਂ ਬਿਨ ਨੇਤਰ ਅਕਰਵਨ, ਅਕਰਵੀਆਂ ਪਕਰਵੀਆ ਤੋਂ ਡੇਰਾ ਪੜੇ ਲਾਈਆ। ਪੈਜ ਮਾਤ ਆਵਾ ਰਕਰਵਣ, ਸਹਜ ਸਹਜ ਆਪਣੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈਆ। ਸਚ ਦੇਹੁਰੇ ਆਵਾ ਵਸਣ, ਮਨਦਰ ਮਹਿਬੂਬ ਹੋ ਕੇ ਮਹਲਲ ਦਿਆਂ ਸੁਹਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਥ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਾਚਾ ਰੰਗ ਇਕਕ ਰੰਗਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਹੇ ਸ਼ਬਦ ਅਗਮੀ ਕਾਧਾ ਅੰਦਰ ਫਿਰਧਾ, ਭਜਯਾ ਵਾਹੋ ਦਾਹੀਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦੀ ਦੱਸੀ ਸਾਚੀ ਕ੍ਰਿਧਾ, ਪੜਦਾ ਦਿੱਤਾ ਉਠਾਈਆ। ਗੇੜਾ ਇਕਕੋ ਵਾਰ ਗਿੜਿਆ, ਗਰਦੰਸ਼ ਰਹੀ ਨਾ ਕੋਈ ਲੋਕਾਈਆ। ਪ੍ਰੇਮ ਪ੍ਰੀਤੀ ਫੁਲ ਰਿਵਡਿਆ, ਪੱਖੜੀ ਵੱਡ ਨਾ ਕੋਈ ਵੱਡਾਈਆ। ਘਰ ਵੇਰਖ ਅਗਮਾ ਥਿਰਧਾ, ਸਚ ਦਵਾਰ ਸੋਭਾ ਪਾਈਆ। ਜੋ ਜੁਗ ਚੌਕੜੀ ਚਿਰਿਂ ਵਿਛਡਿਆ, ਸੈਹਜੇ ਵੇਰਖ ਵਰਖਾਈਆ। ਆਪਣੀ ਧਾਰ ਵਿਚਵਾਂ ਨਿਕਲਿਆ, ਨਿਰਗੁਣ ਨੂਰ ਜੋਤ ਰੁਸ਼ਨਾਈਆ। ਹੁਕਮ ਨਾਲ ਕਿਹਾ ਗੋਬਿੰਦ ਆਪਣੇ ਸਿਰਖ ਲਿਆ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇਵਾਂ ਮਾਣ ਵਡਧਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਪਹਲੋਂ ਮੈਨੂੰ

भਿਕਰਖ ਪਾ, ਗੁਰਮੁਖਵਾਂ ਨੂੰ ਰਸ ਦਿਆਂ ਚਰਖਾਈਆ। ਜਨਮ ਜਨਮ ਦੀ ਤੁਰਖ ਮਿਟਾ, ਤੂਸਨਾ ਦਿਆਂ ਗਵਾਈਆ। ਸਾਚਾ ਮਾਰਗ ਇਕਕ ਲਗਾ, ਇਕਕੋ ਰੰਗ ਰੰਗਾਈਆ। ਹੁਣ ਅਮ੃ਤ ਜਾਮ ਜਾਵਾਂ ਪਿਆ, ਅਮ੃ਤ ਰਸ ਚਰਖਾਈਆ। ਦੂਜੀ ਵਾਰ ਤੇਰੀ ਚਰਨੀ ਦਿਆਂ ਟਿਕਾ, ਟਿਕਕੇ ਮਸ਼ਤਕ ਆਪਣਾ ਨਾਮ ਲਗਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਕਿਹਾ ਕੁਛ ਖੁਸ਼ੀ ਨਾਲ ਖਵਾ, ਆਪਣੀ ਵਸਤ ਵਰਤਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਮੈਨੂੰ ਸਦ ਲੈਣ ਦੇ ਗਵਾਹ, ਬਾਵਨ ਆਵਾਜ਼ ਲਗਾਈਆ। ਓਸ ਆ ਕੇ ਸੀਸ ਦਿੱਤਾ ਝੁਕਾ, ਚਰਨ ਧੂਢੀ ਛਾਰ ਛੁਹਾਈਆ। ਪ੍ਰਭੂ ਉਹ ਵੇਲਾ ਲੈਣ ਦੇ ਆ, ਮਰਧਾ ਪਰਸ਼ੋਤਮ ਤੇਰੀ ਮਰਧਾ ਧੁਰ ਦੀ ਚਲੀ ਆਈਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਨਿਰਗੁਣ ਨੂਰ ਜੋਤ ਕਰੋਂਝਨਾ, ਗੋਬਿੰਦ ਸ਼ਬਦੀ ਧਾਰ ਆਪਣਾ ਨਾਮ ਢਕ ਲਏ ਵਜਾ, ਗੁਰਮੁਖ ਗੁਰਸਿਰਖ ਹਰਿ ਭਗਤ ਸੁਹੇਲੇ ਸੈਹਜੇ ਮੇਲ ਮਿਲਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਚ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਨਿਹਕਲਕ ਨਰਾਧਨ ਨਰ ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ੇਰ ਸਿੱਧ ਵਿ਷ਨੂੰ ਭਗਵਾਨ, ਆਪਣਾ ਖੇਲ ਖਲਾ, ਖੇਲ ਵਿਚਾ ਆਪਣਾ ਆਪ ਖਲਾਈਆ।

(੧੮ ਮਾਘ ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹੀ ਸਮਤ ੨)



ਗੋਬਿੰਦ ਕਹੈ ਕਿਥੋ ਛਡਿਆ ਜਗਤ ਅਨਨਦ ਪੁਰ ਕਿਲਾ, ਚਾਰ ਦੀਗਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਤਜਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਹੁਕਮ ਇਕਕੋ ਮਿਲਾ, ਧੁਰ ਫਰਮਾਣਾ ਦਿੱਤਾ ਦੂਢਾਈਆ। ਸ਼ਬਦੀ ਧਾਰ ਰਹਣਾ ਨਾ ਢਿਲਾ, ਤਤਤ ਸੁਕਰਖ ਨਾ ਕੋਈ ਚਤਰਾਈਆ। ਮੇਰੇ ਹੁਕਮ ਦਾ ਕਵੁਣਾ ਛਿਲਾ, ਚਿਲਾ ਤੀਰ ਕਮਾਨ ਸੁਹਾਈਆ। ਸੁਹਜਣਾ ਹੋਏ ਵੇਲਾ, ਧੁਰ ਦੇ ਵਕਤ ਵਜ੍ਝੇ ਵਧਾਈਆ। ਤੇਰਾ ਮਾਲਕ ਇਕ ਇਕੇਲਾ, ਸਚਰਖਣਡ ਨਿਵਾਸੀ ਨਜ਼ਰੀ ਆਈਆ। ਜੋ ਮੰਗਣਾ ਮੰਗ ਕੇ ਲੈ ਲਾ, ਦੇਵਣਹਾਰ ਦਿਆ ਕਮਾਈਆ। ਜੋ ਕਹਣਾ ਰਸਨਾ ਨਾਲ ਕਹਿ ਲਾ, ਹਰਿ ਸੁਣ ਕੇ ਖੁਸ਼ੀ ਬਣਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਭਾਣਾ ਸੈਹਣਾ, ਦੂਜੀ ਆਸ ਨਾ ਕੋਈ ਵਧਾਈਆ। ਤੇਰੇ ਚਰਨ ਕੱਵਲਾਂ ਰਹਣਾ, ਏਹੋ ਮੇਰੀ ਵਡਧਾਈਆ। ਤੇਰੇ ਧਾਮ ਦਵਾਰੇ ਬਹਿਣਾ, ਅਸਥਾਨ ਇਕਕੋ ਸੋਭਾ ਪਾਈਆ। ਦਰਸ ਕਰਾਂ ਬਿਨ ਨੈਣਾਂ, ਤੇਰੀ ਅਕਰਖ ਮੇਰੀ ਰੁਸ਼ਨਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਚ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਸਦ ਆਪਣਾ ਲੈਣਾ ਬਣਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਹੈ ਮੈਨੂੰ ਅਗਮੀ ਲਗਾ ਟਿਕਕਾ, ਬਿਨ ਹਤਥਾਂ ਦਿੱਤਾ ਕਿਸੇ ਲਗਾਈਆ। ਮੇਰਾ ਰੂਪ ਹੋ ਗਿਆ ਨਿਕਕਾ, ਜਗ ਨੇਤ੍ਰ ਨਜ਼ਰ ਕੋਈ ਨਾ ਪਾਈਆ। ਲੇਖ ਅਨੋਖਾ ਲਿਖਾ, ਲਾਈਨ ਸਤਰ ਢਾਈ ਵੰਡ ਵੰਡਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਕਿਹਾ ਉਠ ਮੇਰਧਾ ਸਿਰਖਾ, ਸਿਰਖਿਆ ਤੈਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਦੂਢਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਧੁਰ ਦੇ ਬਿਨ ਧਰਨੀ ਤੋਂ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ, ਧਰਮ ਦਾ ਸਾਕ ਨਾ ਕੋਈ ਬਣਾਈਆ। ਸਦਾ ਮੇਰਾ ਪੂਰੀਂ ਪਿੱਛਾ, ਪਿੱਛੇਤਾ ਰਹੇ ਨਾ ਕੋਈ ਲੋਕਾਈਆ। ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਦਵਾਰੇ ਵਿਕਾ, ਕੀਮਤ ਆਪੇ ਲੈਣੀ ਪਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਕਰ ਕੇ ਹਿਤਾ, ਮੇਹਰ ਨਜ਼ਰ ਇਕ ਉਠਾਈਆ। ਅਗਲਾ ਕਰਾਧਾ ਚੇਤਾ, ਪੜਦਾ ਦਿੱਤਾ ਚੁਕਾਈਆ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਹੋਵਾਂ ਇਕਕੋ ਨੇਤਾ, ਨਰ ਨਰਾਧਨ ਵੇਸ ਵਟਾਈਆ। ਤੇਰਾ ਮੇਰਾ ਮੇਰੇ ਘਰ ਹੋਵੇ ਏਕਾ, ਏਕਕਾਰ ਹੋ ਕੇ ਖੇਲ ਖਲਾਈਆ। ਸਿਰਖ ਉਧਾਰਨੇ ਤੇਰਾ ਸੁਹਿਤ ਵਾਲਾ ਠੇਕਾ, ਦੂਜੀ ਸ਼ਰਅ ਨਾ ਕੋਈ ਬਣਾਈਆ। ਤੇਰਾ ਗੁਰਮੁਖ ਫੇਰ ਜਨਮੇ ਨਾ ਮਾਈ ਪੇਟਾ, ਅਗਨੀ ਅਗਨ ਨਾ ਕੋਈ ਤਪਾਈਆ। ਤੂੰ ਸ਼ਬਦੀ ਗੋਬਿੰਦ ਸਤਿ ਸਚ ਦਾ ਖੇਵਟ ਖੇਟਾ, ਮਲਾਹ ਧੁਰ ਦਾ ਦਿਆਂ ਵਰਖਾਈਆ। ਆਦਿ ਦਾ ਤਪਜਿਆ, ਹੁਕਮ ਦਾ ਬੇਟਾ, ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਸ਼ਬਦੀ ਸੇਵ ਕਮਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਚ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਨਿਹਕਲਕ ਨਰਾਧਨ ਨਰ, ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ੇਰ ਸਿੱਧ ਵਿ਷ਨੂੰ ਭਗਵਾਨ, ਸਾਚੀ ਦੇ ਕੇ ਸਤਿ ਸਚ ਦੀ ਭੇਟਾ, ਗੋਬਿੰਦ ਭਾਵ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾ ਰਖਾਈਆ। (੧੯ ਮਾਘ ਸ਼ ਸ ੨)



गोबिन्द कहे क्यों छड़िया गोबिन्द खेड़ा, अखाड़ा जगत वाला बणाईआ। क्यों पिआ द्वैती झेड़ा, झागडे विच्च लड़ाईआ। क्यों सरसे डोबिआ बेड़ा, आपणा लेखा भेट कराईआ। क्यों आपणा बंस निरखेड़ा, धुर दी वंड वंडाईआ। क्यों जगत होया अन्धेरा, रैण अन्धेरी छाईआ। क्यों अन्तम होया फेरा, अग्गे गुरू ना कोई वडयाईआ। क्यों गोबिन्द बण के चेरा, चिरी विछन्ने जोड़ जुड़ाईआ। क्यों नाऊँ धराया सिंघ शेरा, शरअ तों बाहर प्रगटाईआ। क्यों बण वडु दलेरा, दो जहानां रिहा भवाईआ। क्यों छुपा के आपणा चिहरा, जलवा नूर कीता रुशनाईआ। क्यों शब्दी बण के केहरा, भबक दित्ती सुणाईआ। क्यों निरवैर हो के करे मेहरा, मेहर नजर इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।

गोबिन्द कहे क्यों पुर अनन्द छड़ुया गराँ, गिरह आपणी वेरव वरवाईआ। शब्दी सतिगुर शब्द कराई हां, रसना जिहा वंड ना कोई वंडाईआ। की सिखिआ दित्ती मां, जगत नाता हो के रमज लगाईआ। क्यों हलूणी फड़ के बांह, बच्चिआं वांग जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क वरताईआ।

गोबिन्द कहे याद आदी पुराणी, पूरब दिआं जणाईआ। जिस वेले निरगुण नानक सरगुण नानक पहली वार सुणाए आपणी बाणी, आपणा नाम जणाईआ। खेल दस्स के परे चार खाणी, परा पसन्ती मद्भम बैरवरी तों परे ढोला गाईआ। शब्द सतिगुर दस्स हाणी, इक्को रंग रंगाईआ। आपणा प्रेम अमृत पाणी, जाम धुर दा दित्ता पिलाईआ। घर बण सुधड़ सुचज्जी सवाणी, सोहणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल कर मेहरवानी, मेहर नजर उठाईआ। दस जामे बण के रहणा बाल अंजाणी, तत्तां वाला शरीर हंढाईआ। फेर निरगुण धार आवे जवानी, जोबन अगला लैणा हंढाईआ। जिस दी चार जुग दस्स ना सकण निशानी, भेव सके ना कोई खुलाईआ। ओस वेले तेरा प्यार नाम मुहब्बत मेरी होवे महिमानी, रस अगम्म इक्क वरवाईआ। एह खेल परे दो जहानी, सृष्टी दा रचेता ब्रह्मा भेव कोई ना पाईआ। कोई जलवा नहीं जिस्मानी, तत्तां नाल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णुं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जाण जाणी, जानणहार आपणी खेल रिवलाईआ।

(१८ माघ शै सं २)



गोबिन्द कहे पुर अनन्द पिआ रो, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तुध बिन मेरी बात ना पुछे को, सहायक नायक नजर कोई ना आईआ। क्यों नाता तोड़िआ मुहब्बत मोह, भेव अभेदा दे खुलाईआ। मेरे अंदर तेरा चरन गिआ छोह, सरन मिली सरनाईआ। धरनी

ने आपणा पाप लिआ धो, दुरमत मैल गवाईआ। तेरे प्रकाश दी होई लो, बिन लोचन नजरी आईआ। किझँ सभ कुछ लिआ खोह, खाली भंडारे दित्ते बणाईआ। मेरे नाल कर के धरोह, धुर दा नाता लिआ जुडाईआ। कुछ अमृत रस आपणा चो, गहर गम्भीर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक्क कराईआ।

गोबिन्द कहे पुर अनन्द वहाए नीर, छहिबर प्रेम लगाईआ। क्यों बदल दित्ती तकदीर, तदबीर की बणाईआ। मैं बण के हकीर, शहनशाह तेरे चरनां सीस झुकाईआ। साचे प्रेम दा दे सीर, अमृत रस चरवाईआ। एह तेरा विरसा तेरी जागीर, तेरे नाम लगाईआ। जिथ्थे गुरमुखां दी रहन्दी भीड़, उह खाली दवारे रहे कुरलाईआ। बिरहों विच्च मेरी अंदरों निकले पीड़, धीरज धीर ना कोई आईआ। वास्ता कछु लकीर, निझँ निझँ सीस झुकाईआ। तूं लेरवा जाणे शाह हकीर, शहनशाह नूर खुदाईआ। तेरे अगे वास्ता हक्क अमीन, कामल मुशर्द हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क सुणाईआ।

गुर गोबिन्द कहे पुर अनन्द मारी धाह, कूक कूक सुणाईआ। मैनूं दिसे कोई ना राह, रहबर तेरी झल्ली ना जाए जुदाईआ। तेरे बिना कम्म ना आवे ख़लक खुदा, खादम हो के झोली डाहीआ। मेरा लेरवा दे बदला, बदली विच्च अदली रूप वटाईआ। ठांडे दर हो सहा, सहायता अनाइत विच्च झोली पाईआ। क्यों बैठा मक्ख भुआ, बिन करवट लै अंगढाईआ। मैं वास्ता रिहा पा, तेरे चरनां सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वरवाईआ।

गोबिन्द कहे पुर अनन्द चीक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हुण कद रकवां उडीक, धुर दे मालक दरसणा माहीआ। कवण वेला वक्त तारीख, तरीका देणा जणाईआ। मेरा अन्तर होवे ठांडा सीत, अगनी तत्त बुझाईआ। गोबिन्द किहा जिस वेले तेरा मेरा सांझा होया गीत, पुरख अकाल, इक्को ढोला दए समझाईआ। तूं बैठा रहणा अतीत, त्रैगुण विच्चों आपणा मुख छुपाईआ। आपणे अन्तर रक्खणी मेरी प्रीत, बाहर सृष्टी होए हलकाईआ। साचे नाम दी दे वसीअत, असलीअत दित्ती दृढाईआ। जिस वेले दीन दुनी बदली नीयत, नीतीवान नजर कोई ना आईआ। गुर अवतार पैगगबर रहे ना कोई अहिमीयत, माण चले ना कोई चतराईआ। ओस वेले सच प्यार दी बदला वलदीयत, वेस अवेसा रूप वटाईआ। सच अनन्द दी बणा मलकीअत, पूर पूरन ब्रह्म दृढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णुं भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ।

(१८ माघ शहनशाही सम्मत २)



गोबिन्द कहे पुर अनन्द कदुया हाढ़ो, हाए हाए कर सुणाईआ। किथे चल्लया धुर
दा लाड़ा, लाड़ी मौत जगत करे कुड़माईआ। मैनूं दे के लारा, बैठा मुख भवाईआ। अगला
दे सहारा, सैहजे रिहा जणाईआ। जिस वेले आवां निरगुण धारा, निरवैर नाल मिल के
वेस वटाईआ। डंक वजावां अपर अपारा, अपरंपर स्वामी खुशी बणाईआ। हुक्म देवां विच्च
संसारा, महांसारबी हो के आप समझाईआ। तेरा पूरब लहणा देणा लेखा जगत विचारां,
विचला पड़दा आप चुकाईआ। भाग लगावां ओस दुआरा, जिस दवारे आपणा रंग वर्खाईआ।
साचा अनन्द कर उजिआरा, पुर पुरीआं तों बाहर प्रगटाईआ। जिथे भगतां मिले सहारा,
सभ नूं आपणे घर वसाईआ। मेल मिला के सिरजणहारा, सिर सिर दए वडयाईआ। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णुं
भगवान, कूड़ी क्रिया कर के पार किनारा, अनन्द आपणा दए वर्खाईआ।

(१८ माघ शहनशाही सम्मत २)



गोबिन्द किहा पुर अनन्द रो के कद्दे तरला, तरां, तरां समझाईआ। साहिब सतिगुर
सद रक्ख आपणे चरनां, चरन धूड़ी टिक्का खाक रमाईआ। गोबिन्द किहा इक्को धुर दा
ढोला पढ़ ला, बिन विद्या दिआं जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा याद कर ला, याददाशत आपणी
लै बणाईआ। सच दवार इक्को मल ला, कदीम दा अगला पन्ध मुकाईआ। सच अनन्द
अनन्द ओस कर ला, जिथे मुक्क कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणा भेव खुलाईआ।

(१८ माघ शहनशाही सम्मत २)



गोबिन्द किहा पुर अनन्द हाए, बौहड़ी कर सुणाईआ। तुध्ध बिन दूजा नजर कोई
ना आए, नईआ नौका पार ना कोई लंघाईआ। धरनी धरत धवल उप्पर पकड़े कोई ना
बांहे, सगला संग ना कोई बणाईआ। साचा रंग ना कोई वर्खाए, अनन्द अनन्द विच्चों
प्रगटाईआ। धुर दा गीत कोई ना गाए, अनरागी राग ना कोई सुणाईआ। पुरख अकाल
ना वेरवण आए, बिन गोबिन्द गृह ना कोई वडयाईआ। पुर अनन्द कहे क्यों बैठा मुख
छुपाए, छप्पर छन्न दे सुहाईआ। गोबिन्द किहा एह हुक्म बेपरवाहे, देवणहारा धुरदरगाहीआ।
हुण तेरा मेरा संग रहे ना राए, अगला संग इक्क बणाईआ। जिस वेले मेहरवान महिबूब
किरपा करे खुदाए, खुद मालक आपणा फेरा पाईआ। निरगुण धार गोबिन्द शब्द नाल
रलाए, लोकमात निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सच अनन्द पुर इक्क वसाए, जिस विच्च
भगत बहि के सोभा पाईआ। वरन बरन ना वंड वंडाए, जात पात ना कोए रखाए, ऊँच
नीच ना कोई अखवाए, रंक राजान ना कोए चतराईआ। इक्को ढोला सभ नूं दए सुणाए,

तूं मेरा मैं तेरा दूजा नजर कोए ना आईआ । वेला वक्त दए वड्डिआए, भगत दवार वज्जे वधाईआ । तेरी आसा मनसा पूर कराए, अमावस अन्धेर दए गवाईआ । साचा नूरी चन्द चमकाए, निरगुण जोत करे रुशनाईआ । भगत सुहेले संग रखाए, गुरमुख आपणे घर टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णुं भगवान, शब्दी धार जोत उजिआर, सच वचोला आप अखवाए, जगत रौला रहण कोए ना पाईआ ।

(१८ माघ शहनशाही सम्मत २)



गोविंद किहा मेरा सच्चा अनन्दपुर, पुरीआं लोआं तों परै नजरी आईआ । जिथे पुरख अकाल वसे धुर, सचरवण्ड निवासी बैठा सोभा पाईआ । दर दरवेश मंगते अवतार पैगग्बर गुर, दर ठांडे सीस झुकाईआ । राह तक्कण देवत सुर, विष्ण ब्रह्मा शिव अकर्ख उठाईआ । निरगुण निराकार निरवैर नाल जुङ, आपणा आप बदलाईआ । वस्त भंडारा रहे कोई ना थुङ, अतोट अतुट वरवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह साचा इक्क दरसाईआ ।

गोविंद किहा मेरा अनन्द पुर अगम्मा अहाता, चार दीवारी नजर कोई ना आईआ । छप्पर छन्न ना कोई छाता, बाढी बणत ना कोई बणाईआ । ना कोई नजरी आवे ताका, कवाड़ बन्द ना कोई कराईआ । ना कोई वेख सके खाका, रूप रंग ना कोई समझाईआ । जिस घर वसे पुरख अबिनाशा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ । सच प्रीती दे भरवासा, नाम सबूरी सिदक बणाईआ । निरगुण नूर कर प्रकाशा, जोती जाता डगमगाईआ । सभ तों वरवरा रक्खया आपणा खाता, दूजा वंड ना कोई कराईआ । सो वसदा रहे आदि जुगादा, जुग चौकड़ी सोभा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच अनन्द आपणा इक्क वरवाईआ ।

गोविंद किहा मैं अनन्द पुर वेख्या अगम्मी चंगा, चंगिआईआं बुरयाईआं विच्चों बाहर नजरी आईआ । जिथे बैठा सूरा सरबन्ना, शाह पातशाह शहनशाह आपणा आसण लाईआ । इक्को नाम वज्जे मरदंगा, दूजा ताल ना कोई सुणाईआ । इक्को ढोला इक्को छन्दा, कलमा इक्को इक्क सालाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वडयाईआ ।

गोविंद कहे मैं वेख्या अनन्दपुर आहला, आलीशान नजरी आईआ । जिस दा मार्ग सच सुखाला, भगतां दित्ता दृढ़ाईआ । जिथे नूर इक्क निराला, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ । जिथे वस्सण शाह कंगाला, राओ रंक वंड ना कोई वंडाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे रिहा टिकाईआ ।

गोविंद किहा मैं वेख्या अनन्द पुर अनोखा, परम पुरख दित्ता जणाईआ । जिस

घर होवे कोई ना धोरवा, भरम विच्च ना कोई भुलाईआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, अकरवरां अकरव ना कोई तकाईआ। मार्ग दिसे सौरवा, अबिनासी करता दए चढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोकां, चौदां तबक ना कोई वडयाईआ। ओथे इकको अगम्मी सुणिआ सलोका, तूं मेरा मैं तेरा नाम ध्याईआ। शब्द धार सतिगुर होका, हुक्म फ्रमाणा इकक सुणाईआ। होए प्रकाश साची जोता, नूर नुराना डगमगाईआ। दो जहान तों वक्खरा कोठा, कायनात तों बाहर दित्ता बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वडयाईआ।

गोविन्द कहे मैं अनन्द पुर तककया बिनां अकर्वां, सति सुहञ्जणा नजरी आईआ। जिथे पुरख अकाल बैठा सरवा, सहायक नायक धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगगबर मंगदे लकर्वां, रवाली झोली अग्गे डाहीआ। इकको नाम जैकारा लग्गे सच्चा, सोहँ धुन इकक शनवाईआ। काया माटी दिसे कोई ना भाण्डा कच्चा, तन वजूद ना कोई वडयाईआ। करे खेल पुरख समरथा, मेहरवान आपणा डेरा लाईआ। देवे हुक्म अलकर्वना अलकर्वा, अलकर्व अगोचर आपणी कार कमाईआ। चुक्कणा पए ना तीर कमान भथ्था, जगत कटार ना कोई उठाईआ। इकको मिले अगम्मी वथ्था, वस्त अमोलक दए वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा सभ तों उत्तम होवे कथा, रसना कथनी कथथे कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथा, समरथ स्वामी अन्तरजामी घर आपणे सोभा पाईआ।

गोविन्द कहे मैं अनन्द पुर दा वेख्या अनन्द, अनन्द धुर दा नजरी आईआ। जिथे ना कोई सूरज ना कोई चन्द, मण्डल मंडप ना कोई वरवाईआ। ना कोई शस्त्र ना कोई संद, सन्ध्या रूप ना कोई वर्खाईआ। ना कोई दीन मञ्जूहब पाबन्द, शरअ शरीअत जंजीर ना कोई बंधाईआ। ना कोई द्वैत दूई कंध, भरमां विच्च ना कोई डरमाईआ। ना कोई सिफतां वाला छन्द, इकको ढोला रिहा गाईआ। ना कोई जगत कटार जंग, मन वासना ना कोई लड़ाईआ। इकको नजरी आए सूरा सर्बग, धुर दा दाता बेपरवाहीआ। प्रेम प्रीती चाढे रंग, रंगत आपणा नाम रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद देवे सगला संग, साथी हो के आपणा साथ निभाईआ। (१८ माघ शहनशाही सम्मत २)



गोविन्द कहे अनन्द पुर तों अगला वेख्या सुख, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल तजाईआ। जगत वासना दीन दुनी रिहा ना कोई दुःख, ममता मोह तन वजूद नजर कोई ना आईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार उजल कीता मुख, दुरमत मैल दीन दयाल पारब्रह्म प्रभ आपणी आप धवाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणी गोदी लिआ चुक्क, सचरवण्ड दवार एकंकार आपणा रंग चढ़ाईआ। पड़दा उहला

निरगुण सरगुण रिहा कोई ना लुक, जोती जाते पुरख विधाते आपणी दया कमाईआ। दरगाह साची सच दवारे लिआ पुच्छ, मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच्च बुलाईआ। मैं निरगुण धार होया खुश, शब्दी ढोला राग सुणाईआ। अकलकलधारी तूं मेरा मैं तेरा पुत्त, बिना पतिपरमेश्वर दूजा संग ना कोई रखाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तुड्डा पंज तत्त काया बुत्त, सृष्टी दृष्टी विच्चों बाहर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक्क सुहाईआ।

गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या घर अगम्मा, अलख अगोचर दित्ता वरवाईआ। जिस धारों बिन मात पिता दे जम्मा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सद जीवत रहां बिनां दमां, जन्म मरन ना रूप वटाईआ। वसदा रहां बिन काया माटी चम्मा, अप तेज वाए पृथमी आकाश रजो तमो सतो जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। नित जोबन हंडावां जुग चौकड़ी नवां, रूप रंग रेख भेरव प्रभ दे हत्थ, फड़ाईआ। खेल विच्च वेखदा रहां समां, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग धुर दी कार कमाईआ। लेरवे ला के सुत दुलारे चौहां, चार जुग दा लहणा दित्ता मुकाईआ। माया ममता रही ना कोई तमां, घर गृह घराने दित्ते तजाईआ। लोड़ रही ना तेल बाती वाली शमां, शमशान भूमी विच्चों बाहर डेरा लाईआ। सद इक्को ढोला कहवां, तूं मेरा मैं तेरा पुरख अकाल पिता माईआ। सोहँ धार विच्च रहवां, दूजा रंग ना कोई बदलाईआ। सच सिंघासण अगम्मी सेजे सवां, सत्थर यार इक्क हंडाईआ। अमृत रस प्रेम प्रीती अंदर पीवां, तृष्णा भुक्ख जगत ना लागे राईआ। बिन सीस जगदीस दवारे रहवां नीवां, सचरवण्ड दवारे दरगाह साची सोभा पाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगार ढोला गावां, गीत गोबिन्द इक्को नाम बणाईआ। साची सेजा साहिब स्वामी अन्तरजामी इक्को रावां, नार भतार कन्त, कन्त कन्तूहल सुत दुलारा इक्को खेल वरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवार दित्ता वरवाईआ।

गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अगला वेख्या गृह, मन्दर धुर दा नजरी आईआ। जिथ्ये सो पुरख निरँजण निरगुण हो के बहे, हरि पुरख निरँजण हो के आपणी कार कमाईआ। एकंकार हो के आपणी धार वहे, आदि निरँजण हो के निरगुण नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता हो के आपणा हुक्म कहे, श्री भगवान हो के वेरवे चाई चाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के आपणी वस्त आपे दए, दाता दानी दीन दयाल वड्डी वडयाईआ। गुर अवतार पैगग्बर जिस ने आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोटन कोट कीते लय, सरगुण निरगुण आपणे विच्च छुपाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव जिस दी सरनी ढैह, दर दवारे भिक्खवक हो के मंगण थाउँ थाईआ। कोटन कोट जुग शब्दी धार इच्छया अंदर जिस ने कीते लै, उत्पत विच्च उपमां जगत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दर इक्क सुहाईआ।

गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों खेल वेख्या अगला, भेव अभेदा कहण कोई ना पाईआ। जिथ्ये आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को चार मंगला, दूजा राग नाद ना कोई सुणाईआ। शरअ जंजीर रहे कोई ना संगला, दीन मज़ूहब वंड ना कोई वंडाईआ। धुर दा सजदा इक्को

होवे बन्दना, नमों नमस्ते रूप ना कोई बदलाईआ। मस्तक धूँढ़ी जगत ललाटी लाए कोई ना चन्दना, सरगुण धार ना बंधन पाईआ। दीन दयाल समरथ स्वामी पुरख अकाला इकको एक एक बख्शांदना, बख्शिश रहमत आपणे हत्थ रखाईआ। जिस दा दवारा बण भिखारा लाल दुलारा हो के मंगणा, खुशीआं नाल वस्त अमोलक धुर दी झोली आप भराईआ। सति सतिवाद आपणी धार दी चाढ़े रंगणा, रंगत विच्च रूप रंग रेख ना कोई समझाईआ। सचरवण्ड दवार एकंकार इकक इकल्ला सुहाए आपणा अञ्जणा, अंगीकार इकको नजरी आईआ। जिस दी चरन धूँड गुर अवतार पीर पैगंबर करन मज्ना, भगत सन्त गुरमुख गुरसिरव सूफी बैठे राह तकाईआ। जिस दा नाम नगारा दो जहानां ताल वज्जणा, वाजब आपणा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारा इकक वडयाईआ। (९६ माघ शहनशाही सम्मत २)



गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या नूर, नूर नुराना नजरी आया। पुरख अकाला हाजर हज्जूर, हरि जू बैठा सोभा पाईआ। मेरी अर्ज बेनन्ती कर मनज्जूर, मेहर नजर इकक उठाईआ। जुग चौकड़ी भगत उधारना मेरा दस्तूर, नित नवित्त निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। प्रेम प्रीती अंदर होवां मजबूर, मुशकल विच्च खुशदिल हो के रंग रंगाईआ। नाम खुमारी देवां सर्कर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। सच भंडारा भरां भरपूर, अतोट अतुट वरताईआ। सन्त सुहेले वेरवां ज़रूर, जाहर जहूर हो के करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार एकंकार धुर दरबारा इकक वरवाईआ।

गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या धुर दा घर, मन्दर सोहणा नजरी आईआ। जिथे वसे निरगुण हरि, हरी बैठा सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगंबरां देवे वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। हुक्मे अंदर सभ कुछ रिहा कर, करनी दा करता खेल रिलाईआ। महल्ल अटल उच्च मनारे चढ़, सच सिंघासन सोभा पाईआ। साची सिख्या बिन लिख्यां सभ दे अग्गे देवे धर, धुर फरमाणा इकक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगंबर विष्ण ब्रह्मा शिव तूं मेरा मैं तेरा लैण पढ़, सोहँ ढोला सारे गाईआ। निरगुण नाल निरगुण दी लग्गे जड़, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचरवण्ड दवार देवे माण वडयाईआ।

गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे तकक्या राह, दो जहानां परे नजरी आईआ। जिस दा अबिनाशी करता इकक मलाह, बेड़ा आपणा नाम चलाईआ। सूफीआं जिस नूं किहा खुदा, पैगंबर सजद्यां विच्च सीस झुकाईआ। जिस दा नाम तराना धुर दी सदा, रागाँ नादां बाहर सोभा पाईआ। उस दी समझे कोई ना वजह, वाहद आपणी कार कमाईआ।

ਨਿਰਗੁਣ ਧਾਰ ਸਭ ਦਾ ਅੜਾ, ਬਾਲ ਅੰਜਾਣੇ ਵੇਰਵੇ ਥਾਉੰ ਥਾਈਆ। ਦੋ ਜਹਾਨ ਜਿਸ ਨੇ ਹੁਕਮੇ ਅੰਦਰ ਬਧਾ, ਬਨਦਗੀ ਵਿਚਚ ਸਾਰੇ ਸੀਸ ਨਿਵਾਈਆ। ਗੋਬਿੰਦ ਕਹੇ ਮੈਂ ਓਸ ਦਾ ਸੁਣਿਆ ਸਵਾ, ਸ਼ਬਦੀ ਹੁਕਮ ਵਿਚਚ ਸ਼ਨਵਾਈਆ। ਸਚਖਣਡ ਦਵਾਰ ਗਿਆ ਭਜ਼ਾ, ਮਾਤਲੋਕ ਵਿਚਵਾਂ ਆਪਣਾ ਪਨਘ ਮੁਕਾਈਆ। ਕਿਸੇ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਦਗਾ, ਕੂੜ ਫਰੇਬ ਨਾ ਕੋਈ ਹਲਕਾਈਆ। ਸਚ ਦਵਾਰਾ ਧੁਰ ਦਾ ਲਭਾ, ਨਾਤਾ ਤੁਢਾ ਕੂੜ ਲੋਕਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦੀਨ ਦਯਾਲ ਪ੍ਰੀਤੀ ਵਿਚਚ ਲਗਾ ਚੰਗਾ, ਸਚ ਸ਼ਵਾਮੀ ਅਨਤਰਜਾਮੀ ਆਪਣੀ ਦਿਆ ਕਮਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਦੇਵਣਹਾਰਾ ਸਾਚਾ ਵਰ, ਸਚ ਗ੍ਰਹ ਦਏ ਵਡਧਾਈਆ। (੧੬ ਮਾਘ ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹੀ ਸਮੱਤ ੨)



ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਅਨਨਦ ਪੁਰ ਤੋਂ ਅਗਲਾ ਵੇਖਿਆ ਹਕ ਮਹਲਲਾ, ਜਿਸ ਦੀ ਬਾਡੀ ਬਣਤ ਨਾ ਕੋਈ ਬਣਾਈਆ। ਪਰਵਰਦਿਗਾਰ ਵਸ਼ਸਥਾ ਇਕ ਇਕਲਲਾ, ਅਲਲਾ ਜਿਸ ਨੂੰ ਕਹ ਕੇ ਸਾਰੇ ਗਾਈਆ। ਧਾਮ ਸੁਹਾ ਕੇ ਨਿਹਚਲ ਅਛੁਲਾ, ਦੇਵਣਹਾਰ ਸਰਬ ਵਡਧਾਈਆ। ਸ਼ਬਦੀ ਧਾਰ ਫੜਾ ਕੇ ਪਲਲਾ, ਆਪਣੀ ਗੱਢ ਪਵਾਈਆ। ਓਸ ਦੀ ਧਾਰ ਵਿਚਚ ਰਲਾ, ਜੁਗ ਨੇਤ੍ਰ ਨੈਣ ਵੇਰਵਣ ਕੋਈ ਨਾ ਪਾਈਆ। ਏਹ ਰਖੇਲ ਅਛਲ ਅਛਲਾ, ਸ਼ਾਸਤਰ ਸਿਮਰਤ ਵੇਦ ਪੁਰਾਨ ਅੜੀਲ ਕੁਰਾਨ ਖਾਣੀ ਬਾਣੀ ਸਮਝ ਨਾ ਕੋਈ ਸਮਝਾਈਆ। ਸਚ ਦਵਾਰ ਦਰਗਾਹ ਸਾਚੀ ਮੁਕਾਮੇ ਹਕ ਇਕਕੋ ਮਲਲਾ, ਮਾਲਕ ਮਹਿਬੂਬ ਵੇਰਖ ਖੁਸ਼ੀ ਬਣਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਕਰੇ ਰਖੇਲ ਸਾਚਾ ਹਰਿ, ਸਚ ਦਵਾਰਾ ਇਕਕੋ ਇਕ ਸੁਹਾਈਆ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਹਾ ਅਨਨਦ ਪੁਰ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਅਨਨਦ ਅਨਨਦ ਵਿਚਚ ਸਮਾਈਆ। ਨਿਰਗੁਣ ਧਾਰ ਹੋ ਆਯਾਦ, ਦੋ ਜਹਾਨਾਂ ਭਜ਼ਾਂ ਵਾਹੋ ਦਾਹੀਆ। ਜਨ ਭਗਤਾਂ ਕਰਾ ਪਿਛਲੀ ਧਾਰ, ਧਾਦਾਸ਼ਤ ਅਗਲੀ ਰਿਹਾ ਜਣਾਈਆ। ਭੇਵ ਅਭੇਦਾ ਖੋਲ੍ਹ ਆਗਾਜ, ਪੜਦਾ ਉਹਲਾ ਆਪ ਚੁਕਾਈਆ। ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਦਰਸ ਕੇ ਰਾਜ, ਰਹਮਤ ਹਕ ਕਮਾਈਆ। ਧੁਰ ਦਾ ਸ਼ਬਦ ਅਗਮੀ ਮਾਰ ਆਵਾਜ, ਸੌਈ ਸੁਰਤੀ ਸੁਤੀ ਆਪ ਤਠਾਈਆ। ਭੇਵ ਖੁਲ੍ਹਾ ਪੁਰਖ ਅਬਿਨਾਸ਼, ਰਾਹ ਮਾਰ ਰਿਹਾ ਵਰਖਾਈਆ। ਜਿਸ ਦਾ ਹੁਕਮ ਪੂਥਮੀ ਆਕਾਸ਼, ਹਰ ਘਟ ਰਕਵੇ ਨਿਵਾਸ, ਨਿਰਗੁਣ ਨੂਰ ਜੋਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼, ਆਤਮ ਪਰਮਾਤਮ ਆਪਣੀ ਧਾਰ ਜਣਾਈਆ। ਓਸ ਘਰ ਗ੍ਰਹ ਮਨਦਰ ਸੁਹਾਵਣੇ ਕੀਤਾ ਨਿਵਾਸ, ਛੜ੍ਹੀ ਸੇਜ ਜਗਤ ਪ੍ਰਭਾਸ, ਧਾਰਡੇ ਪੂਰੀ ਕੀਤੀ ਆਸ, ਨਾਤਾ ਤੋੜ ਕੇ ਪਵਣ ਸ਼ਵਾਸ, ਪਨਘ ਮੁਕਾ ਕੇ ਪੂਥਮੀ ਆਕਾਸ਼, ਵਾਸਤਾ ਇਕਕੋ ਨਾਲ ਰਖਾਈਆ। ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਜੋਤ ਧਰ, ਨਿਹਕਲਕ ਨਰਾਧਨ ਨਰ, ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ੇਰ ਸਿੱਘ ਵਿਣ੍ਹੂਂ ਭਗਵਾਨ, ਸਚ ਦਵਾਰੇ ਕਰ ਆਬਾਦ, ਨਿਰਗੁਣ ਧਾਰ ਨਿਰਗੁਣ ਕਰੀ ਇਮਦਾਦ, ਆਮਦ ਵਿਚਚ ਆਪਣੇ ਵਿਚਚ ਸਮਾਈਆ। (੧੬ ਮਾਘ ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹੀ ਸਮੱਤ ੨)



ਅਨਨਦ ਪੁਰ ਤੋਂ ਅਗਲਾ ਘਰ ਦਿਸਿਆ ਸੁਹਭਜਣਾ, ਗੋਬਿੰਦ ਵੇਰਖ ਖੁਸ਼ੀ ਮਨਾਈਆ। ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਮਿਲਿਆ ਆਦਿ ਨਿਰੱਜਣਾ, ਅਬਿਨਾਸ਼ੀ ਕਰਤਾ ਧੁਰ ਦਰਗਾਹੀਆ। ਸਤਿ ਪ੍ਰੀਤੀ ਕਰਾਧਾ ਮਜਨਾ,

सरोवर अगम्म अथाह नुहाईआ। ठाकर हो के मिल्या सज्जणा, सगला संग बणाईआ। बन दगी दस्स के आपणी भजना, भाउ भेव पड़दा दित्ता उठाईआ। सचरवण्ड दवारे सदा वस्सणा, थिर घर वज्जदी रहे वधाईआ। करना खेल पृथ्मी आकाशना, दो जहानां सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत होवे प्रकाशना, शब्दी आपणा डंक सुणाईआ। निरगुण धार वेरवणा खेल तमाशना, तमां तृष्णा कूड़ मिटाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगंबर करदे गए उपाशना, लोकमात ध्यान लगाईआ। सो लेखा जाणे सर्ब गुण तासना, गहर गम्भीर नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारा इक्क सुहाईआ।

गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अगला वेख्या संग, हरि संगी धुर दरगाहीआ। चाढ़ अगम्मी रंग, रंगत दित्ती बदलाईआ। आसा मनसा पूरी कर उमंग, तृष्णा दित्ती मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुण के छन्द, सोहँ ढोला दित्ता जणाईआ। नूर विच्च नूर चाढ़ चन्द, नूर नूर विच्च समाईआ। सच दवार दा दे अनन्द, अनन्द पुरी दा लेखा दित्ता मुकाईआ। झगढ़ा रिहा ना कोई जंग, रवड़ग रवण्डा ना कोई रवड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे घर सोभा पाईआ।

गोबिन्द कहे अनन्द पुरी दा कर किनारा, पत्तण पिछला दित्ता तजाईआ। वेख्या खेल नर निरँकारा, सचरवण्ड दवार वज्जे वधाईआ। जोत सरूप अगम्म अपारा, अलख अगोचर सोभा पाईआ। सच सिंघासण शाह सिकदारा, शहनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। शब्दी शब्द इक्क जैकारा, धुर संदेशा राग अलाईआ। मन्दर महल्ल अद्वल उच्च मनारा, दरगाह सच मुकामे हक्क सोभा पाईआ। कोटन कोट दर दरवेश खड़े गुर अवतारा, पैगंबर सीस निवाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव करन निमस्कारा, धूढ़ी टिक्के मस्तक खाक रमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी अन्तरजामी देवणहारा, दे दे आपणी खुशी बणाईआ। गोबिन्द कहे मैं वेख्या सच्चा घर बाहरा, पिछला भुल्ल गिआ प्यारा, अग्गे आपणा आप प्रभ दे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णुं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण करे विहारा, बिवहारी हो के धार आपणी आप बदलाईआ। (१६ माघ शै सं २)



गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों वेखी धार अगली, दो जहानां परे ध्यान लगाईआ। नाता तोड़ सृष्टी सगली, धुर स्वामी अन्तरजामी मिल के खुशी मनाईआ। फेर सत्थर यार सेज विछौणी पए ना विच्च जंगलीं, उच्ची कूक ना कोई सुणाईआ। वस्त अगम्म अथाह इक्को मंग लई, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणे रंग रंग लई, रंगत इक्को इक्क चढ़ाईआ। सच दवारे साचे सद लई, सदके वारी हउँ घोली घोल घुमाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे अलख
जगाईआ ।

गोविन्द कहे पुर अनन्द तों अगला वेख्या रस्ता, जगत जहान पगडण्डी दित्ती तजाईआ । पुरख अकाल दीन दयाल तक्कया हरसदा, हसती विच्च मस्ती रिहा चढ़ाईआ । नाम प्याला देवे आपणे रस दा, रसना तों बाहर सिफत सालाहीआ । इशारा दे अगम्मी अकर्ख दा, जग लोचणां तों नैण लिआ बदलाईआ । खेल दस्स सचरवण्ड प्रतकर्ख दा, दरगाह साची धाम नयारे पड़दा दित्ता उठाईआ । भण्डारा खोलू नूर नुराने हट्ट दा, वणजारा हो के वणज दित्ता कराईआ । पड़दा लाह के लकर्ख चुरासी अन्तर आत्म घट घट दा, चारे खाणी लेखा दित्ता समझाईआ । नाद वजा के अनहद आपणे नद दा, परा पसन्ती मद्दम बैखरी लहणा दित्ता मुकाईआ । हुक्म दे के खेल दस्सया अलग्ग दा, तत्तां वाला नाता दित्ता तुड़ाईआ । जोड़ा दस्सया सूरे सरबन्ना, दा दूजा संग ना कोई बणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ ।

गोविन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे लिआ तक्क, हरि करता नजरी आईआ । निरगुण धार साहिब समरथ, परवरदिगार बेपरवाहीआ । हकीकत विच्चों दस्से हक्क, प्रतकर्ख रूप गोसाईआ । सच जैकारा बोल अलकर्ख, अलकर्ख अगोचर आपणा आप दित्ता दृढ़ाईआ । मैं चरन कँवल बिन धवल गिआ ढटु, बिन धूढ़ी मस्तक टिकका साचा लिआ रमाईआ । साहिब सतिगुर पकड़ उठाया झट्ट, बिन हत्थां हत्थ लगाईआ । तैनूं रहण नहीं देणा वकर्ख, अड्हुरा घर ना कोई बणाईआ । नाता तोड़ के मास नाड़ी हड्ह, जोती धार विच्च समाईआ । की होया पुरी अनन्द आया छड्ह, सचरवण्ड सोहणा मन्दर इक्क सुहाईआ । जिथे आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित मेरी चले यद, पुशत पनाह आपणा हत्थ टिकाईआ । जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुरान अज्जील कुरान खाणी बाणी कोई ना सके लभ्म, खोज विच्च खोजण कोई ना जाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा नर नरेशा निरगुण निरवैर आप सुणाईआ ।

गोविन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे तक्कया एकंकार उह, ओडक जिस दी सारे ओट तकाईआ । सृष्टी दृष्टी नालों बैठा हो निर्मोह, मोह मुहब्बत निरगुण निरगुण नाल रखाईआ । जिस दा लेखा अवर ना जाणे को, कोटन कोट जुग समझ किसे ना आईआ । गुर अवतार पैगरबर जिस दी सुणदे रहे सो, सो साहिब स्वामी अन्तरजामी आपणा भेव खुलाईआ । सच प्रकाश कर अगम्मी लो, लोयन तों परे करे रुशनाईआ । जिस दी धार सदा दो, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ । परमात्म हो के आत्म जावे छोह, शहनशाह हो के वस्त अमोलक नाम वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचरवण्ड निवासी घट जोत प्रकाशी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ ।

गोविन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे तक्कया इक्क अकाल, अकल कलधारी नजरी आईआ ।

जिस मैनुं बणाया लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत विच्च समाईआ। मेरी लेरवे ला के घाल, कीती घाल थाएं पाईआ। सचरवण्ड दवारा वर्खा सच्ची धर्मसाल, सच सिंघासण आसण दित्ता लगाईआ। झगड़ा मुका के काल महांकाल, दीन दयाल दित्ता वडयाईआ। मेरा हल होया सवाल, मनसा मोह दित्ता चुकाईआ। तत्तां विच्चों लिआ ज्वाल, अगनी अग्ग ना कोई तपाईआ। बाला नद्दु बणा नौजवान, जोबन आपणा दित्ता वर्खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा नर नरेशा निरगुण सरगुण आप सुणाईआ।

गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे खुलिआ वेख्या ताक, ताकतवर पड़दा आप उठाईआ। जिस दा दे के आए भविष्ट वाक, वाकिआ वेरवे चाई चाईआ। साहिब स्वामी हो के देवे साथ, सगला संग निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, सोहँ ढोला दित्ता दृढ़ाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर करदे गए जिस दा जाप, जगजीवण दाता जुगती जोग इक्क जणाईआ। गोबिन्द कहे जिस दी सिफ्त विच्च सिफ्त गए आरव, आरवर आपणी कार कमाईआ। कलिजुग अन्तम देवे दात, दाता दानी हो के आप वरताईआ। कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द नूर रुशनाईआ। जन भगत बणाए सच जमात, जुमला अकरवर वकरवर इक्को नाम पढ़ाईआ। महल्ल अटल उच्च मनारा सुहाए इक्क महिराब, महिबूब हो के मुहब्बत विच्च आसण लाईआ। सच सुनेहड़ा सतिगुर हो के देवे आप, गुरमुख गुर गुर आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णुं भगवान, जन भगतां देवे धुर दा साथ, संगी साथी हरि करता इक्को नज़री आईआ। (१६ माघ शहनशाही सम्मत २)



गोबिन्द कहे पुर अनन्द तों चंगा सचरवण्ड, दरगाह साची वज्जे सच वधाईआ। जिस गृह मन्दर अंदर बैठा निरगुण रूप सूरा सरबना, शाह पातशाह शहनशाह परवरदिगार सांझा यार नूर खुदाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण नहीं कोई वंड, तत्त वजूद नज़र कोई ना आईआ। अकरवरां वाला नहीं कोई गावण वाला छन्द, राग नाद गीत संगीत वज्जे ना कोई वधाईआ। इक्को जोत नूर अगमी चढ़ाया चन्द, रव सस सूर्या मुख ना कोई वर्खाईआ। झगड़ा नहीं कोई दीन मज़ब ऊँच नीच राओ रंक जात पात विच्च वरभंड, लोक परलोक गणत ना कोई गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचरवण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकंकार इक्क इकल्ला सच सिंघासण सोभा पाईआ।

गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या मुकामे हक़, हकीकत इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित्त पुरख अकाल मिले समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जिस दा चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील कुरान खाणी बाणी

गुर अवतार पैगम्बर गौंदे जस, रसना जिहा बत्ती दन्द सोहले ढोले राग सुणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सच दवारे रिहा वस्स, जोती जाता पुरख विधाता निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। कोटन कोट देवत सुर रिख मुन साध सन्त सूफी फकीर बेनजीर चरनी रहे ढटु, बिन सीस जगदीश सारे रहे झुकाईआ। चारे खाणी चारे बाणी अन्तर निरंतर मंतर जिस दा नाम रहे रट, बोध अगाध शब्द अनाद धुर दी धुन करे शनवाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाला पुरख अकाला मार्ग लावे सच्च, कलिजुग कूड़ी क्रिया चार कुण्ट चार वरन अठारां बरन दए गवाईआ। कर प्रकाश काया माटी पंज तत्त कच्च, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव अभेदा अछल अछेदा पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचरखण्ड दवारे देवे माण वडयाईआ।

गोबिन्द किहा अनन्द पुर तों अग्गे वेख्या अगम्म दवार, जिस दा भेव ना कोई खुलाईआ। जिस नूं समझ ना सके वेद चार, शास्त्र सिमरत कहण कोई ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दर दे भिरवार, भिक्खवक हो के बैठे झोलीआं डाहीआ। सो दवारा एकंकारा रक्खे ठंडा ठार, अगनी तत्त आदि जुगादि ना कोई तपाईआ। निरगुण सरगुण वस्त देवे दाता दानी बण थार, थिर घर पड़दा उहला दए चुकाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण निरवैर निराकार निरँकार, कल कलकी वेस वटाईआ। जिस दी आदि अन्त जुगा जुगन्त पावे कोई ना सार, महांसारथी हो के दो जहानां श्री भगवाना आपणा रथ चलाईआ। कूड़ क्रिया जगत माया ममता मेटे विभचार, दुरमत मैल अगनी तत्त बुझाईआ। शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन दस्से इक्क प्यार, सुरती शब्दी नाता दए जुङाईआ। दीन मजहब जात पात ऊँच नीच राओ रंक साध सन्त इक्को घर दए वरखाल, जिस गृह शाह पातशाह शहनशाह सचरखण्ड निवासी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा शब्दी नाद वजाईआ।

गोबिन्द कहे अनन्द पुर तों अग्गे मंजल हकीकी चढ़या, पुरख अकाल दित्ती वडयाईआ। बिन अकर्खां बिन अकर्खरां निरअकर्खर इक्को पढ़या, जिस ने भेव अभेदा दित्ता खुलाईआ। सच वरखाया धुर दा घरया, गृह मन्दर वज्जदी दिसी वधाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश परवरदिगार इक्को करया, ज्ञाहूर ज्ञहूर विच्चों प्रगटाईआ। चरन कँवल सच सरनाई बिन सीस धड़ पढ़या, जोती जोत जोत भेट कराईआ। मेहरवान महिबूब मुहब्बत विच्च हुक्म अगम्मा करया, करनी दे करते कुदरत दे मालक दित्ता समझाईआ। चार कुण्ट दह दिशा चार वरन अठारां बरन मन वासना सृष्टी दृष्टी अंदर क्यों लड़िआ, भावना ममता मोह वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेश नर नरेश निरगुण धार आप सुणाईआ।

गोबिन्द कहे मैं सुण अगम्मी फरमाणा, बिन रसना जिहा बत्ती दन्द जो प्रभ ने दित्ता जणाईआ। भेव अभेदा खोलू दो जहानां, ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं गगन गगनंतरां

ਪਲਦਾ ਦਿੱਤਾ ਉਠਾਈਆ । ਜਿਸ ਵਿਚਿ ਸਤਿਜੁਗ ਦਾ ਸਤਿ ਵਰਖਾਯਾ ਇਕਕ ਨਿਸ਼ਾਨਾ, ਸਤਿ ਧਰਮ ਦਾ ਸਚਾ ਰਾਹ ਜਣਾਈਆ । ਕਲਿਜੁਗ ਕੂੜੀ ਕ੍ਰਿਧ ਮੇਟੇ ਵਿਚਿ ਜਹਾਨਾਂ, ਮਾਧਾ ਮਮਤਾ ਮੋਹ ਵਿਕਾਰ ਹੱਕਾਰ ਰਹਣ ਕੋਈ ਨਾ ਪਾਈਆ । ਆਤਮ ਪਰਮਾਤਮ ਪ੍ਰਮਾਤਮ ਆਤਮ ਦੂਸਰ ਦਿੱਤੇ ਨਾ ਕੋਈ ਬੇਗਾਨਾ, ਤਤਤ ਸ਼ਰੀਰ ਤਨ ਵਜੂਦ ਮਾਟੀ ਖਾਕ ਵੱਡ ਨਾ ਕੋਈ ਵੰਡਾਈਆ । ਏਕਾ ਨਾਮ ਏਕਾ ਦਾਨ ਦੇਵੇ ਧੁਰ ਸ਼੍ਰੀ ਭਗਵਾਨਾ, ਸਤਿ ਸਤਿਵਾਦੀ ਆਪਣਾ ਹੁਕਮ ਸੁਣਾਈਆ । ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਥ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਕਰੇ ਖੇਲ ਸਾਚਾ ਹਰਿ, ਚਾਰ ਕੁਣਟ ਦਹ ਦਿਸ਼ਾ ਵਰਨ ਬਰਨ ਆਪਣਾ ਰੰਗ ਚੜਾਈਆ ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਿਛਾ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦਿੱਤਾ ਧੁਰ ਸਂਦੇਸ਼ਾ, ਸਨ੍ਧੀ ਹਤਥ ਕਿਸੇ ਨਾ ਆਈਆ । ਤਖ਼ਤ ਨਿਵਾਸੀ ਬਣ ਨਰੇਸ਼ਾ, ਨਰ ਨਰਾਧਨ ਦਿੱਤਾ ਸਮਝਾਈਆ । ਗੋਬਿੰਦ ਸ਼ਬਦ ਸਤਿਗੁਰ ਪੂਰਾ ਆਦਿ ਜੁਗਾਦਿ ਰਹੇ ਹਮੇਸ਼ਾ, ਜਨਮ ਮਰਨ ਜਗਤ ਵਜੂਦ ਖੇਲ ਬਣਾਈਆ । ਜੁਗ ਚੌਕੜੀ ਨਿੱਤ ਨਵਿੱਤ ਮੇਟੇ ਲੇਖਾ, ਭਰਮ ਭੁਲੇਖਾ ਕੂੜੀ ਕ੍ਰਿਧ ਦਾ ਕਛੂਈਆ । ਕਲਿਜੁਗ ਅੱਤ ਚੌਦਾਂ ਸਦੀਆਂ ਮੁਹਮਦ ਠੇਕਾ, ਠਾਕਰ ਸ਼ਵਾਮੀ ਅੱਤਰਯਾਮੀ ਸਭ ਦਾ ਪੂਰਬ ਲਹਣਾ ਦਾ ਮੁਕਾਈਆ । ਜੂਠ ਝੂਠ ਰਹਣ ਨਾ ਦੇਵੇ ਭੇਖਾ, ਸਚ ਸੁਚ ਲੋਕਮਾਤ ਦਾ ਉਪਯਾਈਆ । ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਥ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਕਰੇ ਖੇਲ ਸਾਚਾ ਹਰਿ, ਧਰਮ ਦਵਾਰਾ ਇਕਕੋ ਇਕਕ ਵਰਖਾਈਆ ।

ਗੋਬਿੰਦ ਕਹੇ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦੇਵੇ ਧੁਰ ਫਰਮਾਣ, ਹੁਕਮ ਅੰਦਰ ਹੁਕਮ ਬਦਲਾਈਆ । ਝਗੜਾ ਮੇਟ ਜਿਮੀਂ ਅਸਮਾਨ, ਦੀਨ ਦੁਨੀ ਦਾ ਬਦਲਾਈਆ । ਚਾਰ ਵਰਨ ਅਠਾਰਾਂ ਬਰਨ ਮਾਨਵ ਜਾਤੀ ਸ਼ਬਦੀ ਸਤਿਗੁਰ ਇਕਕ ਜ਼ਾਨ, ਮਨ ਵਾਸਨਾ ਨਾ ਕੋਈ ਲੜਾਈਆ । ਆਤਮ ਪਰਮਾਤਮ ਪਰਮਾਤਮ ਆਤਮ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਬ੍ਰਹਮ ਭੇਵ ਖੋਲ੍ਹ ਮਹਾਨ, ਸਹਿਮਾ ਅਕਥਥ ਪੁਰਖ ਸਮਰਥ ਦੇ ਸਮਝਾਈਆ । ਏਕਾ ਨਾਮ ਦਰਸੇ ਗੁਣ ਨਿਧਾਨ, ਤੂਂ ਮੇਰਾ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਸੋਹੱਂ ਢੋਲਾ ਸਚ ਸੁਣਾਈਆ । ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਥ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਕਰੇ ਖੇਲ ਸਾਚਾ ਹਰਿ, ਸਾਚੀ ਕਰਨੀ ਕਾਰ ਕਮਾਈਆ ।

ਸਾਚੀ ਕਰਨੀ ਦਰਸੇ ਕਰਤਾਰ, ਕੁਦਰਤ ਦਾ ਮਾਲਕ ਦਿਆ ਕਮਾਈਆ । ਕਲਿਜੁਗ ਕੂੜੀ ਕ੍ਰਿਧ ਲੋਕਮਾਤ ਨਿਵਾਰ, ਮਾਧਾ ਮਮਤਾ ਮੋਹ ਮਿਟਾਈਆ । ਸਚ ਸੁਚ ਸਤਿ ਧਰਮ ਡੱਕ ਵਜ੍ਝੇ ਸੰਸਾਰ, ਰਾਓ ਰੱਕ ਕਰ ਸ਼ਨਵਾਈਆ । ਇਕਕੋ ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦਾ ਹੋਵੇ ਜੈਕਾਰ, ਗੁਰ ਅਵਤਾਰ ਪੀਰ ਪੈਗਬਰ ਜਿਸ ਦਾ ਢੋਲਾ ਗਾਈਆ । ਸਚ ਦਵਾਰੇ ਆਤਮ ਕਰੇ ਨਿਮਸਕਾਰ, ਦੂਜਾ ਇ਷ਟ ਨਾ ਕੋਈ ਮਨਾਈਆ । ਪੁਰਖ ਅਕਾਲ ਦੀਨ ਦਿਆਲ ਵੇਰਖੇ ਵਿਗਸੇ ਵੇਰਖਣਹਾਰ, ਘਟ ਘਟ ਅੰਦਰ ਕਾਧਾ ਮਨਦਰ ਫੋਲ ਫੁਲਾਈਆ । ਗੋਬਿੰਦ ਵਿਚੋਲਾ ਸ਼ਬਦੀ ਸ਼ਬਦ ਸ਼ਬਦ ਸੰਸਾਰ, ਸੁਰਤੀ ਸੁਰਤ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤ ਅਕਲ ਕਲਧਾਰੀ ਆਪਣੇ ਰੰਗ ਰੰਗਾਈਆ । ਸਦੀ ਚੌਧਰੀ ਕਰ ਖੁਆਰ, ਬੀਸ ਬੀਸੇ ਦੇ ਅਧਾਰ, ਸਤਿਜੁਗ ਸਚ ਕਰ ਉਜਿਆਰ, ਕਲਿਜੁਗ ਅੰਧ ਅੰਧੇਰ ਕੂੜੀ ਕ੍ਰਿਧ ਦੇ ਖਪਾਈਆ । ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸੱਥ੍ਵ ਹਰਿ, ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰ, ਨਿਹਕਲਕ ਨਰਾਧਨ ਨਰ, ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ੇਰ ਸਿੱਧ ਵਿ਷ਨੂੰ ਭਗਵਾਨ, ਏਥੇ ਓਥੇ ਦੋ ਜਹਾਨਾਂ ਨਿਰਗੁਣ ਰੂਪ ਸ਼੍ਰੀ ਭਗਵਾਨਾ, ਸ੃ਣਟ ਸਬਾਈ ਦ੃਷ਟੀ ਅੰਦਰ ਦੇਵੇ ਦਾਨਾ, ਦਿਆਵਾਨ ਦੀਨਨ ਦੀਨ ਇਕਕੋ ਇਕਕ ਅਰਖਵਾਈਆ ।

(੨੦ ਮਾਘ ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹੀ ਸਮੱਤ ੨)



..... गुर अवतार पैगंबर कहण शगन पिआ रावी कन्ढा, रवी दए गवाहीआ। खेल वेरवे सूर्या चन्दा, सितार अकर्व टिकाईआ। वेस धर वासी पुरी अनन्दा, अनन्द आपणा इकक जणाईआ। उस ने खेल दस्सया पिछला लहणा जो गोबिन्द नाल संगा, सगला संग वरवाईआ। जिस वेले पुरी अनन्द छड्या ते गुरमुखां हत्थ फङ्गाया टुकडा अचार ते कच्चा गंडा, भोजन माता गुजरी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वरवाईआ।

गुर अवतार पैगंबर कहण सत्तर सिरवां ने लै के दान, झोली लई भराईआ। नाले किहा गोबिन्द तेरा पकवान, सानूं दए रजाईआ। चारों कुण्ट मार ध्यान, वेरवण नैण उठाईआ। फेर औणा नहीं एस असथान, पुरी अनन्द ना कोई सुहाईआ। माता गुजरी शब्द सुणिआ बिनां कान, कन्नां विच्च जणाईआ। छत्ती जुग दा जगत ज्ञान, नानक निरगुण सरगुण दए दृढाईआ। खेले खेल श्री भगवान, हरि करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच आपणी कार कमाईआ।

गुर अवतार पैगंबर कहण जिस वेले पुरी अनन्द छड्या, छड्यी आसा जग। गोबिन्द मुख ते पङ्गदा पा के गज्जया, वड बण सूरा सर्वग। पुरख अकाले रखीं लज्जया, मैं तेरा नूरी अगम्मा चन्द। जिस कारन मैनूं लोकमात सदया, नाम दमामा वजा मरदंग। उस विच्च ना पवे भंगया, खुशी करना बन्द बन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इकक सुणाईआ।

पुरख अकाल कीता इशारा, शब्द नाल समझाईआ। गोबिन्द तेरा वेख्या जगत भण्डारा, बिन नैणां नैण उठाईआ। अज्ज खाली होए दुआरा, दर नजर किछ ना आईआ। जरा इस दी कर विचारा, विचर के दे जणाईआ। इकक हलूणा जोर दी मारा, गोबिन्द नूं दिता हिलाईआ। जोती जोत दा दे चमतकारा, नूर कीता रुशनाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल मेरी निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस वेले सतारां सौ छपिंजा कीता सी पन्थ त्यारा, सिरव समाज बणाईआ। बणया सी वरतारा, आपणी दया दया वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर आपणा हुकम वरताईआ।

गोबिन्द किहा प्रभू मेरे विच्च इकक वारी इकक छिन्न आया सी हँकार, मैं बोल के दिता सुणाईआ। गुरसिरवो मैं तुहांडा दातार, देवणहार बेपरवाहीआ। पुरी अनन्द दे भरे भंडार, राणे महाराणे सीस निवाईआ। खिच के नंगी तलवार, कटार दिती चमकाईआ। सभ नूं देवां शंघार, शत्रु रहण कोई ना पाईआ। फेर हत्थ मार उत्ते दस्तार, कलगी दिती हिलाईआ। मैं रूप सच्ची सरकार, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल झट तूं उस वेले मेरे उत्ते पाया भार, शब्द शब्द नाल दबाईआ। नाले हस्स के किहा गोबिन्द तूं पुरी अनन्द दा चार दिन दा मुखत्यार, अन्त भंडारा रहण कोई ना पाईआ। मैं झट

नौं वार चरनां ते कीती निमस्कार, फिर फिर सीस झुकाईआ। प्रभू तूं फेर लिआ उठाल, फङ्ग बाहों गले लगाईआ। जिमीं तों चुकक के इशारा कीता औह वेरव कलिजुग अन्त काल, चारों कुण्ट नगर लगाईआ। फेर वरवाया औह वेरव मेरे भगत दुलारे लाल, लाल आपणे रंग रंगाईआ। बिन मेरी किरपा मेरयां भगतां नूं कोई ना सके खवाल, अवतार पैगगबर गुरू ना कोई वडयाईआ। आदि जुगादि दा मैं दलाल, विचोला इक्क अखवाईआ। सचखण्ड मेरा सच्ची धरमसाल, धर्म दवारा इक्क उपजाईआ। जिथे मंगते शाह कंगाल, देवणहार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

गोबिन्द औह वेरव कलिजुग अन्त नजारा, सच दिआं वर्खाईआ। तैनूं छहुणा पए पुरी अनन्द दवारा, अनन्द पुरी रही कुरलाईआ। एह खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आप समझाईआ। संदेशा देवां शब्द दी धारा, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। जिस वेले कल कलकी बण के आवां अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। खेल करां अपर अपारा, अपरंपर हो के वेरव वर्खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता इक्क अखवाईआ।

पुरख अकाल किहा गोबिन्द गुर अवतार पैगगबर कोई ना कहे मैं दाता दानी, दाता इक्को इक्क अखवाईआ। तुसीं सारे मेरे नाम दी पढ़दे बाणी, शब्द शब्द नाल सालाहीआ। मैं मालक चारे खाणी, लकख चुरासी मेरा नूर रुशनाईआ। विष्ण ब्रह्मा शिव हुक्मे अंदर भरन पाणी, सेवक हो के सेव कमाईआ। आदि जुगादि जुग मेरी मेहरवानी, मेहर नजर नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ।

पुरख अकाल किहा गोबिन्द सोहणा वक्त सुहञ्जणा औणा विच्च संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी वेरव वर्खाईआ। मैं निरगुण नूर करां उजिआरा, जोती जाता वेस वटाईआ। कल कलकी लए अवतारा, अवतरा आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग रीती मार (लकारा), संसार धुर दा राह इक्क प्रगटाईआ। किसे दे अंदर रहे ना कोई हँकारा, साध सन्त ना कोई चतुराईआ। जन भगतां दवारे बणां आप भिखारा, भिक्खक हो के मंग मंगाईआ। इक्क निशानी तेरी रकर्खां पुरी अनन्द दा अन्त गंडा ते अचारा, शहादत सच देणी भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक्क समझाईआ।

गोबिन्द कहे गंडा अचार दा वड्हा आचरन, सच सच सुणाईआ। जिस खाधा तिस लेरवा मुकिआ जीवन मरन, चुरासी फासी ना कोई लटकाईआ। झगड़ा मुकिआ वरन बरन, ज्ञात पाती ना वंड वंडाईआ। गुरमुख साची मंजल चढ़न, जिथे मिले धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ।

(२५ जेठ श सं ६)



““गुर गोबिन्दा साचा संगी, आपणा आप रखवाया। लक्ख चुरासी आए तंगी, कलिजुग अन्तम देणे दुहाया। लाडी मौत एका मंग मंगी, लाल चुन्नी अग्ने डाहिआ। काल सिर वाहे कंधी, साची पट्टी देणे गुंदाया। लक्ख चुरासी नार दुहागण लग्गे चंगी, सम्मत सोलां पंचम जेठ सगन देवे झोली पाया। धर्म राए चित्रगुप्त नाल फरंगी, देवे जंज चढ़ाया। धरत मात इकक सोहणी थां मंगी, जम्बु दीप देणे सुहाया। खेले खेल दाता सूरा जोधा सरबन्नी, दो जहानां पार आसण लाया। इकक वजाए वड मरदंगी, काल नगारा हत्थ फड़ाया। गुरमुखां चोली जाए रंगी, जोत निरँजण सेवा लाया। बजर कपाटी पाड़ आत्म करदी जाए नंगी, एका राह वरवाया। निहकलंक मिल्या साचा संगी, गुर गोबिन्दे लड़ फड़ाया। जुग जुग जाणे आपणा ढंगी, बिध आपणे हत्थ रखवाया। नानक तेरी नाम सुरंगी, गुरमुख तेरे तन मन्दर अंदर देणे वजाया। गुर गोबिन्दे मंग एका मंगी, माछूवाडे झाड़ीं बैठा आसण लाया। नंगी पैरी फिरे प्रभ लाए अंगी, अंगीकार आप अखवाया। तेरी कट्टे अन्तम प्रगट हो हो तंगी, किला पुर अनन्द छुड़ाया। अनन्द पुर ना किसे दा संगी, इट्ट पत्थर नाल रलाया। प्रभ दी जोत सभ तों चंगी, आवण जावण देणे मिटाया। गुर गोबिन्दा एका मंग आपणी मंगी, पुरी अनन्द देणे समझाया। पारब्रह्म आप समझाए, गुर गोबिन्द सपूता। पुरी अनन्द इकक विरवाए, ना कोई दिसे कूटा। सूरज चन्न ना कोई चढ़ाए, पवण ना देवे हूटा। खाणी बाणी कोई दिस ना आए, लोकमात ना कोई बूटा। पीण खाण कोई दिस ना आए, ना कोई दिसे हत्थ ढूठा। तीर कमान ना कोई रखाए, ना भथ्था भन्ने पिच्छे मुद्घा। पहाड़ उजाड़ ना कोई निशान जणाए, ना कोई विरवाए गुद्घा। सच धाम इकक मकान सुहाए, गुर गोबिन्द सुणाए हरि अनडिठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म दिता धर, रस माणिआ एका मिड्डा।

ऐडा आकार हरि निरँकार, एका एक वरवाया। आप आपणा खेल अपार, आपणे रंग समाया। नन्ना निरगुण रूप निरँकार, निरवैर अखवाया। आप आपणा कर त्यार, सरगुण रिहा उपजाया। दा दो जहानां वस्सया बाहर, लिखण पढ़न विच्च ना आया। पप्पा पुरख हरि सुलतान, एका शाहो अखवाया। इकक इकल्लडा वेख बाल निधान, चरन जोड़ा छुहाया। रारा रेख ना कोई जहान, ना कोई नजरी आया। ना कोई धारी दिसे केस, ना कोई मूँड मुँडाया। नॅना नानक गुर दस्मेस हरि जोती सवाया। हरि का रूप पंज तत्त प्रवेश, सो सतिगुर आप बणाया। सो पुरख निरँजण करे आदेस, आप आपणा देस रिहा वसाया। पुर अनन्द इकक नरेश, हरि साचा आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस दसमेस मेल मिलाया।

दस दसमेस गुर गोबिन्द, आत्म वज्जी वधाईआ। दो जहानी वज्जी वधाई मिटी चिन्द, हरि जोत होई कुङ्गमाईआ। मिल्या वर वड मरगिंद, डर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे रिहा समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ आप समझाए, गुर शब्दी शब्द जणाया। दर दवारा वेख वरवाए, कलिजुग देणे दुहाया। सम्मत चौदां रुत्त सुहाए, चौदां लोकां हट्ट खुलाया। काया बुत्त प्रभ डेरा लाए, दिस किसे ना आया। गुरमुख साचे

सन्त उठाए, चरन कँवल उप्पर धवल साचा नाता रिहा बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठ साचा लेरव रिहा लिखाया।”

(९ जेठ २०१४ बि)

